R.N.I. No. 2321/57

रजि. सं. MTR नं. 004/2019-21

सितम्बर 2019

अंक 8

ओ३म्

तपोभूमि

मासिक

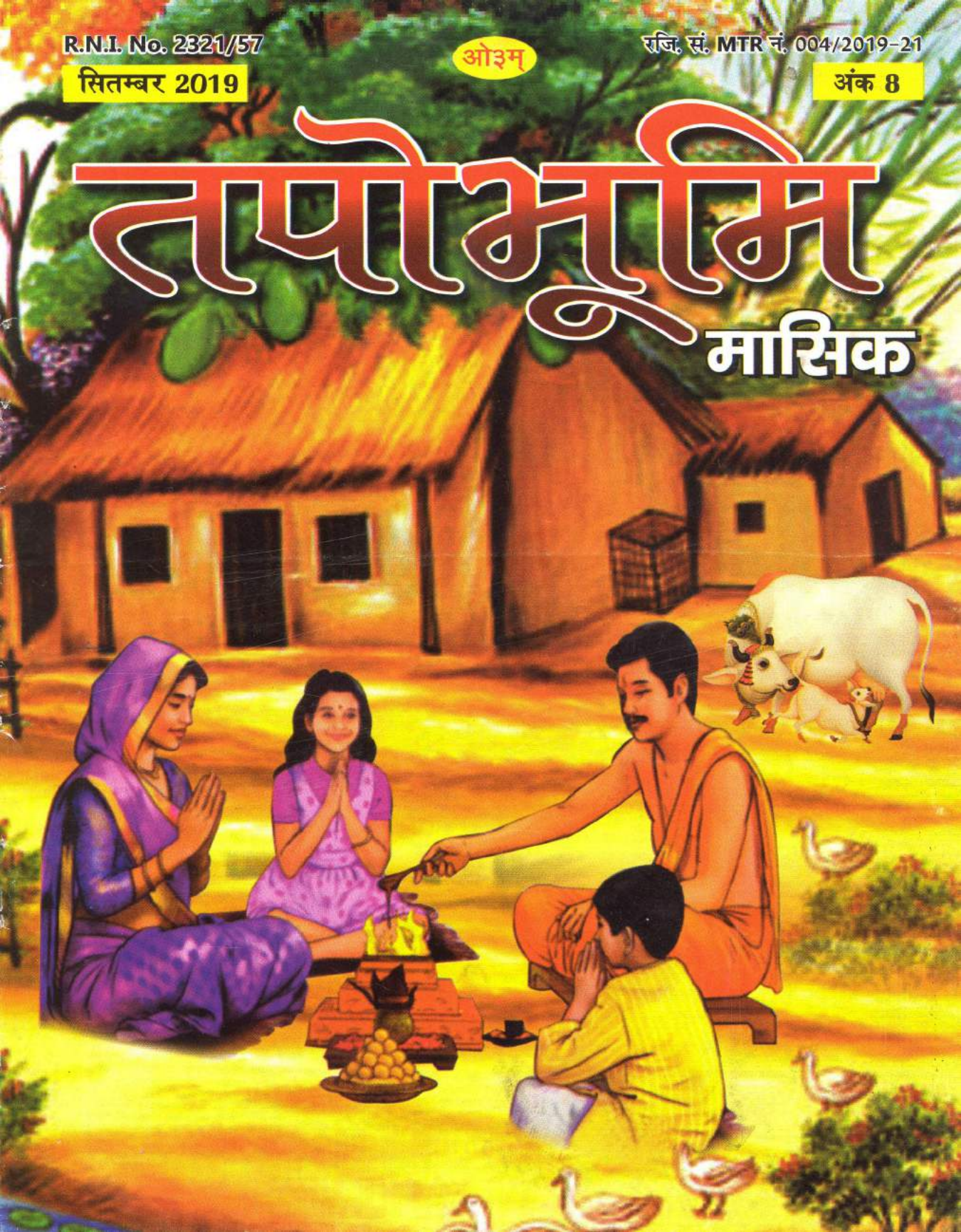

हम नहीं किसी से भी कम हैं

रचयिता:- पं0 प्रकाशचन्द्र कविरत्न

ऋषियों की सन्तान शिरोमणि भारत के वासी हम हैं।
विद्या में बल वैभव में हम नहीं किसी से भी कम हैं॥
हमने दिखलाया है अनुचित कभी किसी को त्रास नहीं
छीन निवास-स्थान, किसी को कभी बनाया दास नहीं
हमने निबल, विकल के हित संकट में पड़ना सीखा है
देश, धर्म, गौरव, गुमान, निज प्रण पर अड़ना सीखा है
अन्यायी दुष्टों से सीना तान अगड़ना सीखा है
और वतन के दुश्मन गद्दारों से लड़ना सीखा है
लड़े हमीं बन रामचन्द्र, रावण राक्षस बलशाली से
लड़े हमीं बन कृष्ण, कंस-सम कपटी क्रूर कुचाली से
लड़े हमीं बन पृथ्वीराज, मुहम्मद गौरी अभिमानी से
लड़े हमीं बनकर रणबंका राणासांगा बाबर से
लड़े हमीं बन प्रबल प्रतापी प्रताप, सुल्ताँ अकबर से
लड़े शिवा गोविंद बन, औरंगजेबी मुगल सल्तनत से
लड़े पेशवा झाँसी की रानी बन ब्रिटिश हुकूमत से
लड़े कभी हम बन्दूकों से, भालों, तीर कमानों से
लड़े कभी तलवार, तमंचों, बरछी, चक्र, कृपानों से
लड़े कभी तो बघनख से हम, लड़े कभी हैं मूसल से
लड़े कभी हम मुगदर से तो लड़े कभी फरसा, हल से
लड़े ईंट और पत्थर से हम, लड़े बांस और बल्ली से
लड़े कभी हम चरखे से तो लड़े कभी हम तकली से
कभी बज्र के तुल्य कभी मक्खन से मधुर मुलायम हैं।
विद्या में बल वैभव में हम नहीं किसी से भी कम हैं॥

हम अपनी धुन के हैं पक्के, हम हैं मन के मर्दाने
सच पूछो तो हैं स्वदेश के हम ही सच्चे दीवाने
खुशी-खुशी मर मिटे वतन पर ज्यों दीपक पर परवाने
की हमने कुरबानी जो, गद्दार मुल्क के क्या जानें
हमीं देश के लिए अधिक संख्या में गए जेलखाने
रिहा, माफ गद्दार हुए थे, हम पर भारी जुर्माने
लुटे विभव-भण्डार, छुटे परिवार और घर-द्वार फुँके
अन्यायी अंग्रेजों के आगे हम फिर भी थे नहीं झुके

(शेष पृष्ठ सं. 35 पर)

तपोभूमि

ओ३म् वयं जयेम (ऋक्0)

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका

(आर्य जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक)

वर्ष–65 संवत्सर 2076 सितम्बर 2019 अंक 8

संस्थापक
स्व0 आचार्य प्रेमभिक्षु

संपादक:
आचार्य स्वदेश
मोबा. 9456811519

सितम्बर 2019

सृष्टि संवत्
1960853120

दयानन्दाब्द: 195

प्रकाशक
सत्य प्रकाशन
आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग
मसानी चौराहा, मथुरा (उ0 प्र0)
पिन कोड–281003

दूरभाष:
0565–2406431
मोबा0 9759804182

अनुक्रमणिका

लेख–कविता		पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	–डॉ0 रामनाथ वेदालंकार	4–5
सन्मित्र–संग्रह	–पं0 माधवराव	6–9
स्वास्थ्य चर्चा		10–11
जवानी की हवा	–बलवीरसिंह 'रंग'	12
आर्यो कुमारो! करो वेद प्रचार	–पं0 नन्दलाल निर्भय	13
सत्याग्रह		14–16
पांच माताओं की हो रही है दुर्दशा	–खुशहालचन्द्र आर्य	17–19
पशुओं के रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा	–	20–22
कोई हमसे सीख लो	–	23–26
अखिल भारतीय वेदांग शोध संगोष्ठी		27
शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा–2019		28–34

❁❁❁

वार्षिक शुल्क 150/– पन्द्रह वर्ष के लिये शुल्क 1500/– रूपये

वेदवाणी

लेखकः डॉ0 रामनाथ वेदालंकार

सविता का आधिपत्य

सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधायां।।
मस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामाकूत्या–
मस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा।।

–अथर्व0 5। 24। 1

शब्दार्थः–

(सविता) प्रेरक तथा सर्वोत्पादक परमेश्वर (प्रसवानाम्) प्रकृष्ट प्रेरणाओं का तथा सर्जनाओं का (अधिपतिः) अधिपति है। (सः) वह (मा अवतु) मेरी रक्षा करे (अस्मिन् ब्रह्मणि) इस ज्ञान में, (अस्मिन् कर्मणि) इस कर्म में, (अस्यां पुरोधायाम्) इस अग्रगामिता में, (अस्यां प्रतिष्ठायाम्) इस प्रतिष्ठा में, (अस्यां चित्त्याम्) इस संज्ञान में, (अस्याम् आकूत्याम्) इस संकल्पकृति में, (अस्याम् आशिषि) इस उत्कृष्ट इच्छा में, (अस्यां देवहूत्याम्) इस देवहूति में। (स्वाहा) हम सबकी सुप्रशस्ति हो।

भावार्थः–

'सविता' प्रकृष्ट प्रेरणाओं का तथा सर्जनाओं का अधिपति है, इनका आदर्श कर्ता है। प्रेरणार्थक षू धातु से बनायें तो वह प्रकृष्ट प्रेरणाओं का दाता है और प्रसवार्थक षु या षू धातु से निष्पन्न करें तो उत्पत्ति या सर्जना का आदर्श है। मन्त्र में उससे प्रार्थना की गयी है कि वह हमें श्रेष्ठ प्रेरणाएँ देकर तथा हमसे नवीन–नवीन सर्जना करवाकर हमारे जीवन को सफल करके हमारी रक्षा करे। किन–किन बातों में हमें उसकी रक्षा या सहायता की आवश्यकता है वे बातें आगे गिनायी गयी हैं। वह ब्रह्म में अर्थात् ज्ञान–सम्पादन में और सम्पादित ज्ञान की रक्षा में हमारा सहायक हो। ज्ञान के साथ तदनुकूल कर्म भी आवश्यक होता है, अतः कर्म में वह हमारा रक्षक हो। कर्म करने के लिए प्रेरणा देता रहे और कर्मसाधना कैसे होती है यह भी बताता रहे। राष्ट्र के अग्रगामी सेनाध्यक्ष हों और योद्धाओं को विजयार्थ उत्साहित करते रहें। हमारी प्रतिष्ठा हो, प्रतिष्ठा के अर्थ नींव का पत्थर बनने की उच्च स्थिति तथा यश–सम्मान दोनों होते हैं। सविता इनकी प्राप्ति के लिए भी हमें सजग करता रहे। चित्ति का अर्थ संज्ञान होता है–'चिती संज्ञाने'। संज्ञान का अर्थ है ज्ञानों का समन्वित रूप। प्राप्त किये हुए ज्ञान यदि परस्पर विरुद्ध दिशा में जाते हैं, तो उनसे विशेष उपलब्धि नहीं हो सकती। 'आकूति' से दृढ़ संकल्प अभिप्रेत है। जो

संकल्प हम करें, उसकी पूर्ति हो। ऐसा न हो कि संकल्प तो बहुत-से करें, किन्तु पालन या सिद्धि एक की भी न हो। 'देवहूति' का आशय है देवों का आह्वान। प्रत्येक वैदिक देव में यौगिकता या योगरूढ़िता के आधार पर तथा वेद में उस-उस देव के वर्णन के आधार पर किन्हीं गुणों की विशेषता-निहित है। जैसे इन्द्र में वीरता की, सोम में शान्ति एवं माधुर्य की, मित्र में मित्रता की, वरुण में पापनिवारण की। देवों का आह्वान करते हुए हम उन-उन विशिष्ट गुणों को अपने अन्दर धारण करने का व्रत लें।

'सविता' से प्रेरणा तथा सर्जना के अधिपति जगदीश्वर और राष्ट्र का राजा दोनों गृहीत हैं। दोनों हमें उक्त शक्तियाँ प्राप्त करने में हमारे आदर्श हों। ❁

तपोभूमि मासिक के पाठकों से विनम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका प्रतिमाह आप तक पहुँच रही है। हमारा हर सम्भव प्रयास यही रहता है कि पत्रिका में उच्चकोटि के विद्वानों के सारगर्भित लेख प्रकाशित करके आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों के अनुसार प्रचार करते हुये यह पत्रिका जन-जन तक पहुँचे। ताकि वे इसका पूर्णतया लाभ प्राप्त कर सकें। लेकिन यह तभी सम्भव है जब आप सबका सहयोग हमें मिले।

'तपोभूमि' मासिक के पाठको से निवेदन है कि जिन्होंने अपना वार्षिक शुल्क चालू वर्ष या पिछले वर्ष का शुल्क अभी तक नहीं भेजा है। वे शीघ्रातिशीघ्र शुल्क भिजवाने की व्यवस्था करें। वार्षिक शुल्क 150/- एक सौ पचास रुपये तथा पन्द्रह वर्ष हेतु 1500/- एक हजार पाँच सौ रुपये भेजकर पत्रिका पढ़ने का लाभ उठायें।

हम आपको प्रति माह पत्रिका पहुँचाते रहेंगे। आपके सहयोग व हमारे परिश्रम से निरन्तरता बनी रहेगी और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी व आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार जन-जन तक भी होता रहेगा।

हमें अपने ग्राहक महानुभावों से यही अपेक्षा है कि बिना विघ्न कार्य सुचारू रूप से चलता रहे। साथ ही यह भी प्रार्थना है कि आप अपने परिश्रम से नवीन ग्राहक बनवाने का सौभाग्य प्राप्त करें।

-धनराशि भेजने हेतु बैंक का नाम व पता एवं खाता संख्या-

इण्डियन ओवरसीज बैंक

शाखा युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, जयसिंहपुरा, मथुरा

I F S C Code- IOBA 0001441

'सत्य प्रकाशन' खाता संख्या- 144101000002341

दान हेतु- 'श्री विरजानन्द ट्रस्ट' खाता संख्या- 144101000000351

सत्साहित्य का प्रचार-प्रसार करना राष्ट्र की सर्वोत्तम सेवा है।

सन्मित्र-संग्रह

लेखकः पं० माधवराव

पापान्निवारयति योजयते हिताय गुह्यं च गूहति गुणान्प्रकटी करोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।। -भर्तहरि।

अर्थ- मित्र को पाप करने से वर्जित करे और उसके हित की बात का उपदेश कर, उसकी गुप्त बात को छिपावे, गुणों को प्रकट करे, आपत्तिकाल में साथ न छोड़े और समय पड़ने पर यथाशक्ति द्रव्य भी दे, यह अच्छे मित्रों का लक्षण सन्तों ने कहा है।

मनुष्य एक सामाजिक जीव है। समाज से उसका बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। वह स्वाभाविक योग्यता सामर्थ्य और गुणों से पूर्ण होने पर भी अकेला अधिक कार्य नहीं कर सकता। उसे सदा किसी अन्य पुरुष या स्त्री की सहायता की, किसी न किसी रूप में, आवश्यकता रहती है। जब तक उसे यह सहायता नहीं मिलती, तब तक उसके अनेक मनोरथ अपूर्ण रह जाते हैं, उसके सांसारिक कार्य अधूरे पड़े रहते हैं, उसका सामाजिक जीवन नीरस हो जाता है और कभी-कभी तो उसका बढ़ा हुआ उत्साह भी क्षीण हो जाता है। अतएव जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त करने के लिए ऐसी सहायता करने वालों का संग्रह करना परम आवश्यक है। सांसारिक जीवन में ऐसी सहायता करने वालों के साथ हमारे अनेक नाते हुआ करते हैं। इन नातों में से मित्र का नाता अत्यन्त पवित्र और श्रेष्ठ माना गया है। सच है, इस स्वार्थमय सृष्टि में मित्र के सिवा हमारा सच्चा सहायक कौन हो सकता है? संकट के समय सम्पत्ति और सन्तति काम नहीं आती। ऐसे समय में हमें आश्रय देने वाला और दुखों में भाग लेने वाला हमारे सच्चे मित्र के सिवा दूसरा कोई हो नहीं सकता। सच्चे मित्रों के मिलने से जो लाभ होते हैं उन का अनुभव वे भाग्यवान् मनुष्य ही कर सकते हैं जिन्हें कभी कोई सच्चा मित्र मिला है। मित्रों के संग्रह करने से स्वार्थ और परमार्थ दोनों की सिद्धि होती है। सच्चे मित्रों के होने से संघशक्ति उत्पन्न होती है और संघशक्ति ही सफलता का सर्वोच्च साधन है।

केवल परिचय अथवा बातचीत हो जाने से ही कुछ मित्रता नहीं हो जाती। मित्र शब्द का यदि व्यापक दृष्टि से विचार किया जाय, तो कहा जा सकता है कि हमें समस्त जीवन में सच्चे मित्र दो चार से अधिक नहीं मिल सकते। 'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना' के न्याय से जब हम देखते हैं, तब यही ज्ञात होता है कि सच्चे मित्रों का मिलना इस संसार में अति दुर्लभ है। जब तक आचार-विचारों में सदृश्यता और एकता न होगी, तब तक दो मनुष्यों में एकप्राणता का होना असंभव है। मित्रता होने के लिए सहृदयता, सहिष्णुता और परस्पर सहानुभूति का होना अत्यन्त आवश्यक है। जब तक ऐसा न होगा तब तक सच्ची मित्रता कदापि नहीं हो सकती।

परन्तु यह देखकर कि सच्चे मित्र संसार में बहुत कम होते हैं, हमें उदासीन नहीं होना चाहिए। समय-समय पर सहानुभूति रखने वाले परिचित सज्जनों की सहायता से भी संसार का बहुत कुछ काम बन सकता है। सब लोग जानते हैं कि सुवर्ण-मुद्रा एक बहुमूल्य वस्तु है, परन्तु इसके साथ ही कोई रुपये के महत्व को अस्वीकार नहीं कर सकता। इसी तरह मित्र और अन्य साधारण परिचय के मनुष्यों में भी भेद हैं। हमें संघशक्ति बढ़ाने के लिए सदैव लोक-संग्रह करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए, और इसमें जब हमें कभी-कभी मित्ररूपी रत्न मिल जाय, तो उसे चुन लेना चाहिए। पर मित्रों की चुनाई में विशेष सावधान रहने की आवश्यकता है। जिस प्रकार सच्चे मित्र के होने से दुःख घटते और सुख बढ़ते हैं, उसी प्रकार नाम मात्र के मित्रों से उलटा परिणाम होता है। सज्जन का यह कर्तव्य है कि किसी से मित्रता करके उसे आजन्म निभा ले। इसलिए इस चुनाई में भूल और धोखा नहीं होने देना चाहिए।

मित्र में जो लक्षण पाये जाने चाहिएँ उनका उल्लेख आरम्भ के श्लोक में किया गया है। जो मनुष्य इन लक्षणों से विहीन हो, वह सच्चा मित्र कभी नहीं हो सकता। हमारे धर्म-ग्रन्थों में मित्र और मित्रता के विषय में अनन्त उपदेशपूर्ण उदाहरण भरे पड़े हैं। उनमें कहा है कि सज्जन को मित्रता दिनोंदिन बढ़ती और दुर्जन की घटती जाती है। सज्जनों के साथ सात शब्द बोलने से अथवा सात कदम चलने से ही मैत्री हो जाती है और नित्य नूतन तथा आकर्षक होती है। परन्तु ऐसे सज्जन-मित्र प्राप्त करने का सौभाग्य बहुत कम लोगों को होता है।

किसी से मित्रता होने के लिए सबसे आवश्यक बात उद्देश की एकता है। परन्तु यदि उद्देश अच्छे, न्याय और सत्यपक्ष के न हों तो उद्देश की एकता होने पर भी वह मित्रता स्थायी नहीं हो सकती। उदाहरणार्थ, चोरों की किसी मण्डली में या जुआरी लोगों के समूह में जो लोग सम्मिलित रहा करते हैं उनमें एक विशेष प्रकार का परस्पर सम्बन्ध पाया जाता है। उन सबका उद्देश एक ही नित्य काम करने का होने के कारण, उसके सिद्ध होने तक वे सब एक मन से काम किया करते हैं। इष्टसिद्धि होने तक वे एक दूसरे की सहायता करते हैं और तभी तक उनमें परस्पर सहानुभूति भी पाई जाती है। यों ही ऊपरी तौर से देखने वालों को जान पड़ता है कि उन लोगों में खासी मित्रता है। इसीलिए उनके सम्बन्ध को व्यक्त करने के लिए वे लोग 'मित्र' जैसे पवित्र शब्द का प्रयोग कर दिया करते हैं, पर यहाँ वे भूलते हैं। सच्ची मित्रता में जो एक प्रकार का निष्काम प्रेम होता है वह उन लोगों में रत्ती भर भी नहीं रहता। मतलब के पूरा हो जाने पर उन लोगों का ऊपरी स्नेहभाव टूट जाता है। ऐसे मित्रों के समूह को मित्र-मण्डली न कहकर चण्डाल-चौकड़ी कहना चाहिए।

ऊपर कहा जा चुका है कि मित्रता करके उसका आजन्म निर्वाह करना चाहिए। इसके लिए हमें निम्नलिखित कर्तव्यों का पालन सदैव करते रहना चाहिए-

पहली बात यह है कि अपने मित्र के क्षुद्र दोषों के विषय में सहनशीलता और क्षमा की दृष्टि होनी चाहिए। इस संसार में कोई मनुष्य सर्वांगपूर्ण और सर्वथा निर्दोष नहीं हो सकता। पहले पहल यदि

कोई मनुष्य हमें वैसा जान पड़े, और अनुभव होते होते वह वैसा न पाया जाय, तो उसमें उसका कोई दोष नहीं है, दोष हमारी ही संकुचित दृष्टि का है। सकलगुणसम्पन्न, सर्वउपमायोग्य और सर्वथा दोष रहित प्राणी इस मृत्युलोक में कैसे मिल सकता है? कोई मनुष्य कितना ही ज्ञानी और सदाचारी हो, पर ढूँढ़ने वालों को उसमें भी कुछ न कुछा दोष मिल ही जाता है। यदि यह नियम सत्य है, तो हम जिस पुरुष के साथ मैत्री करते हैं, एकमात्र वही इस नियम का अपवाद कैसे हो सकता है? परन्तु युवावस्था के जोश में इस नियम पर उचित ध्यान नहीं दिया जाता और बहुत दिनों के परिचित मित्रों में भी दोष-दृष्टि के कारण झगड़े हो जाया करते हैं। अतएव इस बात को भूलना न चाहिए कि यदि किसी मनुष्य में बहुत से उत्तम उत्तम गण हों और कुछ छोटे-मोटे क्षुद्र दोष हों, तो भी वह लौकिक दृष्टि से सकल-गुण-सम्पन्न ही कहलाता है।

दूसरी बात मतभेद की है। यह अनन्त विश्व ऐसे सहस्रों रहस्यों से भरा हुआ है कि दो महाविद्वान् और परम मित्रों में भी किसी न किसी कारण से मतभेद हो सकता है। संसार की नित्यप्रति की घटनाओं में तथा इतिहास में इस बात के कई उदाहरण पाये जाते हैं कि विशेष प्रसंग पर मतभेद होने के कारण चिरकाल के मित्रों की मित्रता मिट्टी में मिल जाती है। एक ऐतिहासिक दृष्टान्त लीजिए। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में फ्रांस देश में भयंकर राज्य-क्रान्ति हुई। इस विषय की चर्चा होते-होते इंगलैंड देश के तत्कालीन दो बड़े-बड़े नेताओं में मतभेद हो गया। ये दोनों नेता (अर्थात् वर्क और फाक्स) उस समय के बड़े चतुर, देशकाल के ज्ञाता और पूर्ण राजनीतिक तो थे ही, पर साथ ही एक दूसरे के गाढ़े मित्र भी थे। जिन लोगों ने इंगलैंड का इतिहास पढ़ा है उनके नेत्रों के सामने इन प्रकाण्ड पण्डितों के उस मतभेद की भीषण मूर्ति साक्षात् आकर खड़ी हो गई होगी, जिसने इनकी चिरकालीन दृढ़ मित्रता को छिन्न-भिन्न कर रसातल में पहुंचा दिया। मानाकि, फ्रांस देश की राज्यक्रान्ति अनेक दृष्टियों से एक बड़ी महत्वपूर्ण बात थी, पर क्या उसके विषय में मतभेद होते ही अपने चिरकालीन प्राणप्रिय मित्र की मित्रता को सहसा तोड़ देना बर्क जैसे सुप्रसिद्ध तत्वज्ञानी को उचित था? जो हो, ऐसी घटनाओं का होना अत्यन्त शोचनीय है। इसमें सन्देह नहीं कि विचार-स्वतन्त्रता और अपनी बुद्धि के अनुसार सच झूंठ का निर्णय करने की इच्छा से ही मनुष्य-जाति के जीवित रहने का सबूत मिलता है, अतएव मतभेद का होना स्वाभाविक है। हरएक विषय का विचार भिन्न-भिन्न प्रकार से किया जा सकता है और उस पर विचार करने वाले प्रत्येक मनुष्य का विचार-मार्ग अलग-अलग रहता है, इसलिए मतभेद टाला नहीं जा सकता। इतना ही नहीं, बल्कि उसका होना अन्त में प्रायः लाभदायक ही सिद्ध हुआ है। परन्तु ऐसी अवस्था में भी केवल मत-विभिन्नता के कारण विकारवश होकर मित्रता का नाश कर डालना किसी 'मित्र' के लिए उचित नहीं कहा जा सकता।

सम्पादित मित्रता को बनाये रखने के लिए तीसरा आवश्यक कर्त्तव्य मन की सफाई और वर्ताव की सरलता है। मित्र के पास कुछ खास-खास बातों के सिवा अपने सब गुप्त कार्यों को बतला देने में कोई

हानि नहीं। उसके मन में वृथा संशय उत्पन्न कर देने से अनर्थ होता है। यदि कभी मित्र के मन में संशय उपजाने वाला अथवा मतभेद करा देने वाला कोई काम हो जाय तो उसे अपना सच्चा अभिप्राय पहले से ही समझा देना चाहिए। नहीं तो परस्पर विश्वास घटने से रूखापन आ जाता है और भेद तथा तिरस्कार का भाव उत्पन्न हो जाता है।

मित्र के साथ सदा सौम्यता और उदारता का बर्ताव रखना चाहिए। बहुतेरे लोग मान लिया करते हैं कि एक बार मित्रता हो जाने पर मनमानी रीति से, बिना किसी रोक टोक के, बर्ताव रखने में कोई हर्ज नहीं। पर यह ठीक नहीं है। हमें अपने मित्र के प्रति ऐसा आचरण रखना चाहिए जिससे उसे अपने विषय में बुरा न मालूम हो, किन्तु उसका स्नेह और आनन्द दिनोंदिन बढ़ता ही जाय। कुछ लोगों की सम्मति है कि सर्वसाधारण के साथ बर्ताव करने में किसी के मान-सम्मान, इज्जत, पद, योग्यता आदि बातों का विचार भले ही किया जाय किन्तु मित्र के साथ नहीं। परन्तु यह भी बड़ी भारी भूल है। अपने मित्र के साथ अनादर, उदण्डता,लापरवाही आदि का बर्ताव रखना तथा मर्मस्पर्शी वचन कहना सर्वथा अनुचित है।

इस संसार में द्वेषी मनुष्यों की कमी नहीं है। किसी को हानि किये बिना उनका पेट ही नहीं भरता। वे किन्हीं दो मनुष्यों की मैत्री को देखकर सहन नहीं कर सकते। ये लोग उनकी मित्रता को नष्ट कर देने के लिये उधार खाये बैठे रहते हैं और खरी खोटी बातें फैला कर और चुगली खाकर उनके मन को एक दूसरे के विषय में कलुषित कर देते हैं। अतएव मित्रों को ऐसे समय में बुद्धिमानी, सतर्कता और कार्यकारण सम्बन्ध के ज्ञान के साथ काम करना चाहिए। ❁

महापुरुषों की जयन्ती	
दादाभाई नौरोजी	4 सितम्बर
डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्ण	5 सितम्बर
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	9 सितम्बर
पं0 गोविन्द बल्लभ पंत	10 सितम्बर
विनोवा भावे	11 सितम्बर
मैडम भीकाजी कामा	24 सितम्बर
पं0 दीनदयाल उपाध्याय	25 सितम्बर
शहीद भगतसिंह	28 सितम्बर
महाराज उग्रसेन	29 सितम्बर

महापुरुषों की पुण्यतिथि	
यतीन्द्रनाथ दास	13 सितम्बर
गुरु विरजानन्द दण्डी	14 सितम्बर
गुरुनानक	27 सितम्बर
राजा राममोहन राय	27 सितम्बर

5 सितम्बर	**शिक्षक दिवस**
14 सितम्बर	**राष्ट्रभाषा हिन्दी दिवस**
15 सितम्बर	**अभियंता दिवस**

गतांक से आगे–

स्वास्थ्य चर्चा

मधुमेह–नाशक

1. जामुन की गुठली का चूर्ण 50 ग्राम, सोंठ 50 ग्राम, गुड़मार बूटी 100 ग्राम सबको कूट–पीसकर कपड़छन कर लें और ग्वारपाठे के रस में घोंटकर झड़बेर के बराबर गोलियां बना लें। एक–एक गोली प्रातः, मध्याह्न और सायं दिन में तीन बार शहद के साथ लें।

एक मास तक सेवन करें, अवश्य लाभ होगा।

कतिपय ध्यान देने योग्य बातें–

(क) कम बोलें।

(ख) खूब व्यायाम करें।

(ग) प्रतिदिन 30 ग्राम गोमूत्र पान करें।

(घ) स्वच्छ पानी में खूब तैरें।

(ङ) दिन में न सोएँ।

(च) रोटी कम खाएँ, हरी सब्जियों एवं फलों का अधिक प्रयोग करें।

(छ) मीठे का प्रयोग बिल्कुल बन्द कर दें।

(ज) दवा आरम्भ करने से पूर्व 3 दिन उपवास करें।

2. यदि केवल चने की रोटी ही 7 दिन तक खाएँ तो पेशाब की शक्कर अवश्य बन्द हो जाएगी। घूमें खूब। गूलर के पत्तों के उबाले हुए पानी से स्नान करें। पानी एक–साथ न पीकर थोड़ा–थोड़ा कई बार पीएँ।

पथ्य– आँवले का रस मधु मिलाकर दें। नाशपाती, (नाक) सेब, नीबू, अमरूद दें। करेला एवं टमाटर भी लाभकारी हैं। दोपहर को केवल जौ की रोटी दें। एक समय रोटी और एक समय मौसमी फल एवं बिना चीनी का दूध दें।

3. उत्तम छुहारे लेकर उनके टुकड़े कर लें और गुठलियाँ निकाल दें। 3–4 टुकड़े मुँह में रखकर चूसते रहें। दिन में 8–10 बार चूसना चाहिए। 5–6 मास सेवन करें।

4. हरी गिलोय का रस 40 ग्राम, पाषाणभेद 6 ग्राम, शहद 6 ग्राम, तीनों को मिलाकर पीने से मधुमेह दूर हो जाता है।

5. प्रतिदिन 5 ग्राम शिलाजीत दूध में मिलाकर पीने से मधुमेह निश्चय ही दूर हो जाता है। कम–से–कम एक किलो शिलाजीत का सेवन कर लें। सर्दियों में सेवन करें।

6. गुड़मार बूटी, जामुन की गुठली, दोनों समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन 6 गग्राम चूर्ण गर्म पानी के साथ प्रातः सायं सेवन करें।

7. 20 ग्राम बिनौली को कूटकर 600 ग्राम पानी में औटाएँ। जब चौथाई पानी रह जाय तब मल-छानकर 10-10 ग्राम जल दिन में 3-4 बार पिला दें। कुछ समय तक निरन्तर सेवन करने से लाभ हो जाएगा।

8. चित्रक के पंचाग का यवकुट (जौ-कुट) चूर्ण 6 ग्राम प्रातः सायं 300 ग्राम पानी में डालकर पकाएँ। जब 50 ग्राम पानी शेष रह जाए तब अग्नि से उतार लें और छानकर गुनगुना रहने पर पिला दें।

अति सरल एवं प्रभावशाली योग है। तीन सप्ताह सेवन करने से बहुमूत्र एवं मधुमेह नष्ट हो जाता है।

9. वटवृक्ष (बड़, बरगद) की छाल 400 ग्राम को 400 ग्राम पानी में पकाएँ। जब 20 ग्राम पानी रह जाए तब आग से उतार, छानकर पिलाएँ।

दोनों समय एक मास तक सेवन करने से मधुमेह रोग नष्ट हो जाता है।

10. जामुन की गुठली 12 ग्राम, अफीम 1 ग्राम, दोनों को जल के साथ घोटकर 32 गोलियाँ बना लें और छाया में सुखाकर शीशी में भर लें।

दो-दो गोली प्रातः सायं जल के साथ सेवन कराएँ। जौ की रोटी और हरे साग एवं सब्जियों का प्रयोग करें। चीनी बिल्कुल न लें।

11. शीतल चीनी, गुड़मार, असगन्ध और शंखाहूली, चारों को समभाग लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। प्रातः सायं तीन-तीन ग्राम ताजा जल के साथ लें। मधुमेह में अत्यन्त लाभकारी है।

-(शेष अगले अंक में)

पाठकों से विनम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका के उन पाठकों से विनम्र निवेदन है जिन्होंने वर्ष **2017 व 2018 का वार्षिक शुल्क** बार-बार के पत्र लेखन तथा फोन द्वारा सूचना देने के बाद भी अभी तक जमा नहीं कराया है। वे वर्ष **2019** के वार्षिक शुल्क के साथ अविलम्ब **'सत्य प्रकाशन'** वेदमन्दिर, वृन्दावन मार्ग, मथुरा के कार्यालय को जमा करायें। शुल्क जमा न होने की स्थिति में पत्रिका बन्द कर दी जायेगी। आशा और विश्वास है कि पाठकगण अविलम्ब शुल्क भेजकर अपनी पत्रिका समयानुसार प्राप्त करते रहेंगे। जो महानुभाव ऑन लाइन द्वारा शुल्क जमा करते हैं वे फोन द्वारा कार्यालय को सूचित अवश्य करें ताकि उनका शुल्क जमा किया जा सके। वे पाठकगण धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने समयानुसार वर्ष 2019 का शुल्क जमा किया है।

-व्यवस्थापक

जवानी की हवा

रचयिता: बलवीरसिंह 'रंग'

आज फिर आई जवानी की हवा।
कुछ न कह पाई जवानी की हवा॥

कौन है जिसको जवानी से न प्यार,
और फिर उसकी कहानी से न प्यार?
किस को संघर्षों ने झकझोरा नहीं,
किस के जीवन में नहीं आई बहार?
कौन है ऐसा धरणि का देवता,
जिसने ठुकराई जवानी की हवा।
आज फिर आई जवानी की हवा॥
कुछ न कह पाई जवानी की हवा।

कांप उठते हैं हिमालय के शिखर,
चाँद-सूरज भूमि पर आते उतर।
ठहर जाते हैं उनन्चासों पवन,
और त्रिभुवन में जलधि जाते बिखर।
जब कि चलती है कभी बे रोक-टोक,
ले के अँगड़ाई जवानी की हवा।
आज फिर आई जवानी की हवा।
कुछ न कह पाई जवानी की हवा॥

आज मेरी आग पानी हो गई,
बात भी क्या थी कहानी हो गई।
मद भरे जीवन के भूखे प्यार की।
प्यास भी तो अब पुरानी हो गई।
देख कर मुझको व्यथाओं से भरा-
नयन भर लाई जवानी की हवा।
आज फिर आई जवानी की हवा।
कुछ न कह पाई जवानी की हवा॥

-(शेष पृष्ठ संख्या 19 पर)

आर्य कुमारो ! करो वेद प्रचार

रचयिता: पं0 नन्दलाल निर्भय, बहीन, जिला–पलवल (हरि0)

हे आर्य कुमारो! करो वेद प्रचार।
बिना वेद प्रचार आर्यो, व्याकुल है संसार॥

ललनाओं की लाज रही लुट जुल्म नित्य होने भारी।
आपा–धापी मची जगत में, पनप गए अत्याचारी॥
गउऐं नित मारी जाती हैं, खुश हैं सब मांसाहारी।
छुआ–छात की ऊंच–नीच की, फैल गई है बीमारी॥

निबलों, विकलों की कोई भी, सुनता नहीं पुकार।
हे आर्य कुमारो! करो वेद प्रचार॥ 1॥

वेद विरोधी पाखण्डी अब, दुनिया भर में घूम रहे।
ऊँचे–ऊँचे महल ठगों के, आसमान को चूम रहे॥
वेद शास्त्र उपनिषद त्यागकर, पढ़ते धूर्त पुराण यहां।
ऋषियों को बदनाम रहे कर, लाखों अब शैतान यहां॥

लूट रहे भोली जनता को, दुष्कर्मी गद्दार।
हे आर्य कुमारो! करो वेद प्रचार॥ 2॥

यवन और ईसाई पापी, नित उतपात मचाते हैं।
यूरोसलम, मदीना, मक्का, के भारी गुण गाते हैं॥
धर्म द्रोही नक्शलवादी, हत्याएं नित करते हैं।
कम्युनिस्ट हैं महा नास्तिक, ईश्वर से ना डरते हैं॥

नेता हैं खुदगर्ज शराबी, नहीं धर्म से प्यार।
हे आर्य कुमारो! करो वेद प्रचार॥ 3॥

अस्त्र, शस्त्र बन रहे, भयानक पनप गई है दानवता।
गुंडा गर्दी मची विश्व में, तड़प रही है मानवता॥
मारे–मारे फिरते हैं अब, सीधे–सच्चे नर–नारी।
सज्जन छिपते फिरते हैं अब, दुष्टों की है सरदारी॥

पतिव्रता भूखी मरती हैं, खुश हैं बड़ी छिनार।
हे आर्य कुमारो! करो वेद प्रचार॥ 4॥

–शेष पृष्ठ सं. 19 पर

सत्याग्रह

सत्यमेकाक्षरं ब्रह्म, सत्यमेकाक्षरं तपः।
सत्यमेकाक्षरं यज्ञ, सत्यमेकाक्षरं श्रुतम्।। –व्यास

सत्याग्रह का अर्थ है आत्मबल! सृष्टि के प्रारम्भ से अब तक इसका प्रयोग व्यक्तिगत विचार–स्वातन्त्रय या धार्मिक आन्दोलनों में समय–समय पर किया गया था, पर जब से धार्मिक जगत् पिछड़ गया और यूरोप के अर्थवाद ने प्रबलता प्राप्त की तब से सत्याग्रह या आत्मबल के प्रयोग और उपयोगिता को संसार भूल गया।

जगत् विकार है, इसमें विरोध रहा है और रहेगा, बल्कि यों कहना चाहिए कि विरोध ही समय–समय पर संसार की पुनरावृत्ति करता रहा है। पहले यह विरोध सत्याग्रह या आत्मबल के स्वरूप में प्रयोग किया गया था और अब यूरोप के अर्थवाद ने तलवार के विरोध को जन्म दिया है। आत्मबल का विरोध जितना शान्त, स्थिर और संजीवक था उतना ही यह तलवार का विरोध अशान्त, अतृप्त और हत्यारा है। वास्तव में विरोध कोई पाप नहीं है, यदि वह अत्याचार न हो और अत्याचार के विपक्ष में हो।

विरोध दो विपरीत पक्षों में होता है। इनमें से यदि एक पक्ष न्याय पर हो तो दूसरा अवश्य अत्याचारी होना चाहिये, क्योंकि अत्याचार के सिवा न्याय किसी का विरोध नहीं करता। अत्याचारी पक्ष स्वेच्छाचारी–स्वाभिमानी–स्वार्थी–और अविवेकी होता है, इसलिये वह स्वयं सबल और प्रधान बने रहने के लिये किसी भी प्रकार की सामाजिक, धार्मिक या अन्य श्रृंखला या उत्तरदायित्व की परवाह नही करता। उसे अपने मार्ग में, न्याय, दया, विचार और त्याग की अपेक्षा नहीं रहती और इसीलिये आत्मबल उसका विरोध करता है; क्योंकि वह परोपकार और सार्वजनिक हित की दृष्टि से न्याय, दया, विचार, त्याग और सामाजिक उत्तरदायित्वों को बनाये रखना चाहता है। अब वह विरोध करती बार अपने इन न्याय, दया आदि स्वाभाविक ध्येयों की उपेक्षा करके अत्याचारी के विरोध का उत्तर हूबहू उसी के से अत्याचार से दे तो उसे न्याय, दया या सार्वजनिक स्वार्थों के पक्ष का अधिकार नहीं रहता। वह दुराग्रह या अत्याचार ही कहाता है, क्योंकि वह विपक्षी के जिन दुर्गुणों को घृणा करता है उन्हीं का अनुसरण भी करता है।

वास्तव में जैसे चोरी का दण्ड चोरी नहीं है, खून का दण्ड खून नहीं है, पाप का दण्ड पाप नहीं है उसी तरह अत्याचार का दण्ड भी अत्याचार नहीं है।

अत्याचारी से यदि कोई न्याय का पक्ष लेकर युद्ध करना चाहे और उस युद्ध में वह स्वयं भी अत्याचार करे तो बहुत करके उसकी विजय नहीं होगी। किन्तु यदि वह अत्याचारी के विरोध में सत्याग्रह या आत्मबल पर दृढ़तापूर्वक जमा रहे तो वह निश्चय से विजयी होगा। क्योंकि अत्याचार प्रायः

पशु-बल के बढ़ जाने से होता है और वह उच्छृंखल तथा अनियंत्रित होने के कारण अपने पशु-बल के प्रयोग और उसके आयोजन में बड़ी भारी स्वाधीनता और सुभीता रखता है। किन्तु न्याय के पक्षपाती को वे सब साधन तथा सुभते नहीं प्राप्त हो सकते। वह बहुत कुछ मुकाबिले में घटिया, कमजोर और मुंहताज रहेगा। एक तो वह मुकाबिले में सब पदार्थों को उपलब्ध ही नहीं कर सकेगा, दूसरे वह प्राप्त वस्तुओं का उतनी सुविधा से उपयोग नहीं कर सकता; क्योंकि अत्याचार वास्तव में उसका ध्येय सिद्धान्त तो है नहीं, प्रत्युत उसकी दृष्टि में घृणित है। वह तो केवल अत्याचार के नष्ट करने को पत्थर से पत्थर मारने की नीति का अवलम्बन कर रहा है, अतएव वह पशुबल में सदैव निर्बल बना रहेगा और हारेगा। इसके विपरीत अत्याचारी में आत्मबल नष्ट हो जाता है; क्योंकि न्याय, दया और लोक-हित की कोमल वृत्तियाँ नष्ट हो जाने पर ही कोई अत्याचरी बना है और यही आत्मबल को पुष्ट करनेवाली गिजा है। उधर सत्याग्रही का आत्मबल बढ़ जाता है; क्योंकि उसका आन्दोलन ही आत्मबल पर है। इसलिये सत्याग्रही अवश्य ही अत्याचारी पर विजय प्राप्त कर सकता है।

विरोध कई प्रकार का है। विरोध के लिये यह आवश्यक बताया गया है कि वह अपनी विपक्षी शक्ति की टक्कर का वजन अवश्य रखता हो। चाहिए तो उससे अधिक, पर अधिक नहीं तो बराबरी की तो टक्कर होनी ही चाहिए। इतना होने पर भी यह आवश्यक नहीं कि विजय उसी की होगी; क्योंकि जो अपने बल को अधिक कौशल से प्रयोग करेगा वही विजयी होगा। पर यह नियम सब प्रकार के सजातीय पशुबल के लिये ही है। जहाँ अत्याचार का विरोध अत्याचार से किये जाने की निकृष्ट पद्धति है वहाँ एक तो समान बल होना ही कठिन है, दूसरे होने पर भी विजय में सन्देह है; कारण पशु-बल के उपयोग के उत्तम कौशल अत्याचारी ही को याद हो सकते हैं। किन्तु विजातीय विरोध के लिये समान असमान कुछ नहीं हैं। एक मच्छर सत्याग्रही एक दुराग्रही अत्याचारी हाथी पर निश्चय विजय प्राप्त करेगा। वहाँ तुल्य बल-विरोध का प्रश्न नहीं रहता; बल्कि तुलना ही नहीं हो सकती। तुलना होती है सजातीय द्रव्यों में। अत्याचार अत्याचार एक से है, इनमें यह रियायत नहीं होगी कि थोड़ा अत्याचार न्याय पक्षवालों का है और बड़ा अत्याचार अन्याय पक्षवालों काहै, इस कारण न्याय की विजय होनी चाहिए। नहीं। जहाँ अत्याचार अधिक होगा वहीं विजय होगी। और यह निश्चय है कि अत्याचार अत्याचारी के ही पास अधिक होगा, इसलिये विजय उसी की होगी। क्योंकि मुकाबिला अत्याचार अत्याचार का हो रहा है; न्याय अन्याय का नहीं। पर सत्याग्रह अर्थात् आत्मबल अत्याचार का विजातीय विरोध है। जैसे दो तलवारों के योद्धा समान होने से ठीक है; वे गदा या धनुष में भी बराबर होने चाहिये; कारण एक तलवार का योद्धा चाहे जैसा तीसमारखाँ हो, पर बन्दूक चलानेवाला एक बालक भी उसे पागल कुत्ते की तरह मार दे सकता है। क्योंकि दोनों विजातीय पद्धति के योद्धा थे। इसलिये बल में महत्व नहीं रहा, यन्त्र में रहा। जैसा कि कहा जा चुका है अत्याचारी की अपेक्षा सत्याग्रह उत्तम यंत्र है; सत्याग्रही चाहे जैसा निर्बल हो अवश्य जीतेगा।

इसके सिवा आत्मबल धन है, ऋण नहीं। वह अपनी सत्ता किसी को नहीं देता। वह हठ अवश्य है, पर वह हठ किसी पर नैतिक या आत्मिक बोझ नहीं लादता। वह स्वयं अत्याचार सहता है, करता नहीं। इसीलिये पशु-बल में और इसमें इतना भारी अन्तर पड़ गया है कि जहाँ पशु-बल के सिपाही ज्यों-ज्यों क्षय होते हैं त्यों-त्यों पशु-बल क्षीण होता है; क्योंकि सिपाहियों की तुच्छ और अस्थाई शरीर-सम्पत्ति ही पशु-बल का मूलधन है। पर सत्याग्रह के सिपाही ज्यों-ज्यों क्षय होते हैं त्यों-त्यों आत्मबल का पक्ष विजयी होता है। क्योंकि सत्याग्रह का मूलधन अक्षय आत्मबल है, जिसके बाबत हजारों वर्षों से प्रसिद्ध है कि **"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहन्ति पावकः"** इत्यादि; और जो मोह त्यागने पर प्रबल होता है।

बहुत लोग जो सत्याग्रह के स्वरूप को नहीं समझते, यह धारणा रखते हैं कि सत्याग्रह निर्बलों का बल है। पर यह धारणा गलत है। यद्यपि जैसाकि पूर्व में कहा जा चुका है सत्याग्रही को किसी के बल की तुलना नहीं करनी पड़ती, इसलिये मच्छर सत्याग्रही भी हाथी दुराग्रही का सामना कर सकता है। इस प्रकार के उदाहरणों से उपर्युक्त धारणा सत्य-सी प्रतीत होती है, पर सिद्धान्त नहीं मानी जा सकती। सत्याग्रह निर्बलों का बल नहीं है, वास्तव में निर्बल पुरुष तो सत्याग्रही हो ही नहीं सकता; और निर्बलों के सत्याग्रह का कोई मूल्य भी नहीं है। उदाहरणार्थ बकरे, गाय, बैल, भेड़ और मुर्गे तथा भांति भांति के पशु-पक्षी कसाइयों के सामने सदा से सत्याग्रह करते आये हैं, पर वे कसाइयों के अत्याचार को स्वयं अत्याचार सह कर भी नष्ट कर नहीं सके। बल्कि लोगों ने इस सत्याग्रह का अर्थ यही समझ लिया कि ये इसी तरह हमारे खाने को कटने के लिये ही बनाये गये हैं, कानून और न्याय ने भी उनकी ओर से मुख फेर लिया।

वास्तव में सत्याग्रह आत्मबल है, और आत्मबल महाबल है। निर्बल तो क्या साधारण बलवाला पुरुष भी सत्याग्रह नहीं कर सकता। यदि मनुष्य में तनिक भी निर्बलता हुई तो वह शान्ति के समय चाहे जैसा सत्याग्रही रहा हो, पर समय पर दुराग्रही बन ही जायगा। शक्ति होने पर ही क्षमा का महत्व है। किसी कमजोर के मुंह पर यदि कोई जबर्दस्त आदमी तमाचा मार दे और वह कहे कि क्षमा किया तो निश्चय उसकी हंसी उड़ेगी। हाँ बलवान पुरुष निर्बल के अपराध ही नहीं, अत्यचार भी क्षमा की दृष्टि से देखे तो यह महत्ता है और यदि उसी क्षमा के बल पर उसका नियन्त्रण करे। बलाबल की असमता पर ध्यान ही न दे-तो यह आत्मबल है यही सत्याग्रह है।

सत्य पर दृढ़ रहने वाला मनुष्य सत्याग्रही कहता है जब तक मनुष्य सत्याग्रही नहीं होता है तब तक उस पर ईश्वर की कृपा भी नहीं होती है। जब तक ईश्वर की कृपा नहीं होगी तब तक आत्मबल भी नहीं बढ़ेगा और बिना आत्मबल के पूर्ण सुख होना असम्भव है।

❁❁❁

आज हमारी पाँच माताओं की हो रही है दुर्दशा

लेखकः खुशहालचन्द्र आर्य, महात्म गांधी रोड (दो तल्ला), कोलकाता

हमारे हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) में पांच माताओं का विशेष महत्व है। वे हैं (1) जन्म देने वाली माता (2) गऊ माता (3) भारत माता (4) वेद माता (5) गंगा माता। आज इन पांचों माताओं की दुर्दशा, अवहेलना व अनदेखी हो रही है जिससे देश पतन की ओर अग्रसर है। इनकी दशा सुधारने से ही देश उन्नति व समृद्धिशाली बन सकेगा। इनका संक्षिप्त वर्णन इसी भांति है-

1- **जन्म देने वाली माता-** आज के नौजवान बच्चे शादी होने के बाद, जहाँ माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखना चाहिए। इसकी बजाय वे अपने माता-पिता को वृद्ध-आश्रम में भर्ती कर देते हैं और उनकी सेवा, सद् उपदेशों व अनुभवों से वंचित हो जाते हैं। यदि कोई परिवार माता-पिता को घर में रखते भी हैं तो वे उनकी सेवा करना तो दूर रहा उनकी तरफ कोई ध्यान भी नहीं देते हैं। यह बात सभी परिवारों में तो नहीं है, परन्तु अधिकतर घरों में वृद्ध माता-पिता की अनदेखी की जा रही है इसलिए आज जन्म देने वाली माताओं की स्थिति दयनीय है।

2- **गऊ माता-** हमारे हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) में गऊ माता का बहुत बड़ा महत्व है। कारण इसके रोम-रोम में परोपकार की भावना व्याप्त है। इसका दूध, घी, दही, छाछ सभी चीजों मनुष्य के लिए अति लाभकारी है। इसकी एक यह विशेषता है कि इसका मूत्र और गोबर कभी भी दुर्गन्ध नहीं देता और इसके मूत्र व गोबर से उत्तम खाद बनता है जिसको खेत में डालने से उत्तम अन्न पैदा होता है और पौष्टिक होता जिसके खाने से शरीर स्वस्थ्य रहता है साथ ही जमीन की उत्पादन शक्ति भी बढ़ती है। जबकि रसायन खाद से उत्पादित अन्न इतना अच्छा नहीं होता और इससे जमीन की उत्पादन शक्ति भी धीरे-धीरे कम होती जाती है। इसलिए गऊ के मूत्र तथा गोबर से बनी हुई खाद उत्तम कहलाती है। गाय के मरने के बाद उसकी खाल और हड्डी भी मनुष्य के काम आती है। इसके बछड़े भी हल जोतने के काम आते हैं। ऐसी गो माता को भी दूध बन्द होने के बाद कसाईयों को काटने के लिए बेच दी जाती है या गली-कूचों में मल खाती हुई घूमती रहती है। आजकल देशी नस्ल की गऊएँ दिन प्रतिदिन कम होती जा रही हैं और विदेशी नस्ल की गऊएँ बढ़ती जा रही हैं। कारण विदेशी गऊओं के दूध अधिक होता है इसलिए देशी गऊएँ अधिकतर कटने में जाती हैं। जबकि देशी नस्ल की गाय का दूध कम जरूर होता है परन्तु पौष्टिक व लाभदायक अधिक होता है परन्तु दुःख है कि किसान पैसे के लोभ में उसको कसाईयों के हाथ बेच देता है और वे काट दी जाती हैं। इस प्रकार भारत में गऊओं की बड़ी दुर्दशा है। गो-हत्या बन्द होने से ही यह समस्या हल होगी।

3- **भारत माता-** भारत माता की हालत इस समय बहुत ही खराब है। यहाँ पाकिस्तान और बंगला देश से आतंकवादी आते हैं और हर दिन निर्दोष हिन्दुओं की हत्या कर देते हैं। भारत में भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, तरफदारी, लूट-खसौट बहुत हो रही है। देश में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड बहुत अधिक बढ़ा हुआ है जिससे लोगों का जीवन बहुत ही अधिक दुःखमय बना हुआ है, इसलिए देश में वैदिक ज्ञान की आवश्यकता है। जिससे अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड समाप्त हो सकता है, इसके लिए यहाँ गाँव-गाँव में गुरुकुल खोलने की आवश्यकता है, जिनमें बच्चे व बच्चियाँ पढ़कर वैदिक धर्मी बनकर इस अन्धविश्वास के वातावरण को दूर किया जा सकता है। जब तक वैदिक धर्म नहीं फैलेगा तब तक यह मूर्त्तिपूजा, श्राद्ध-तर्पण, भूत-प्रेत, कण्ठी-डोरी आदि अन्धविश्वास ऐसे ही चलता रहेगा और देश पतन की ओर बढ़ता रहेगा जिससे देश की दुर्दशा ऐसे ही बनी रहेगी।

4- **वेद माता-** सृष्टि के आदि से लेकर महाभारत तक पूरे विश्व में वैदिक धर्म ही था। महाभारत के विश्व युद्ध में विश्व के अधिकतर वीर, योद्धा, वैदिक विद्वान्, आचार्य आदि के समाप्त हो जाने से कम पढ़े लिखे स्वार्थी ब्राह्मणों के हाथों में वेद प्रचार का कार्य करना आ गया। उन्होंने अपने स्वार्थवश वेदों के मंत्रों का गलत अर्थ लगाकर उसमें यज्ञों में पशुबलि, मूर्तिपूजा, श्राद्ध तर्पण आदि करना आरम्भ कर दिया तथा अनेकों मत-मतान्तर चल दिये जिससे केवल भारत से ही नहीं बल्कि विश्व से वैदिक धर्म प्रायः लुप्त हो गया और अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलवाला हो गया। फिर ईश्वर की अपार कृपा से सन् 1825 में देव दयानन्द का जन्म टंकारा (गुजरात) में हुआ। उसने प्रकाण्ड वैदिक विद्वान् स्वामी विरजानन्द से वेदों का स्वाध्याय करके देश में पुनः वेदों का प्रचार किया। जितना वेद प्रचार होना चाहिए था उतना न होने से अभी तक वेद माता की दुर्दशा ही है। वेद-प्रचार अधिक होने से यह समस्या हल हो सकती है।

5- **गंगा माता-** हिन्दू धर्म में गंगा माता को बड़ा पवित्र माना गया है। इसकी यह विशेषता है कि इसका जल चाहे कितने ही दिन तक रखो परन्तु उसमें कीड़े नहीं पड़ेगें। यह कोई चमत्कार नहीं है, इसका कारण केवल यही है कि पहाड़ों में जहाँ जड़ी-बूटियां अधिक हैं, वहीं से होकर आती है जिससे इसके पानी में यह विशेषता हो जाती है। अन्य नदियों में नहीं। हिन्दू धर्म में यह मान्यता बन गई है कि गंगा नदी में स्नान करने से मनुष्य के पाप कट जाते हैं। यह एक गलत धारणा है जिससे हिन्दू जाति में पाप बहुत बढ़ गया है। महर्षि दयानन्द के वेद प्रचार से यह भ्रम प्रायः समाप्त हो गया है। परन्तु इस समय इसकी जो दुर्दशा हो रही है, उसका कारण भी यह है कि जहाँ-जहाँ से यह गुजरती है उसके किनारे के शहरों का गन्दा पानी इसमें गिरता रहता है और गंगा के पवित्र जल को गन्दा बना देता है कहीं-कहीं तो गंगा का जल इतना गन्दा हो जाता है, उसमें स्नान करने का मन भी नहीं करता। इस प्रकार इस समय गंगा माता की भी दुर्दशा हो रही है।

प्रसन्नता की बात है कि अब नरेन्द्र मोदी का शासन दूसरी बार पूरे बहुमत से आ गया है। अब

आशा है कि देश में आतंकवाद पूरी तरह से समाप्त कर दिया जायेगा। देश से भ्रष्टाचार, रिश्वत खोरी, लूट-खसौट सब बन्द कर दी जायेगी। गो-माता की हत्या बन्द कर दी जायेगी, गंगा में गन्दा पानी गिरना बन्द कर दिया जायेगा। देश में वेदों का प्रचार अधिक होना आरम्भ हो जायेगा जिससे अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड भी समाप्त हो जायेगा और माता-पिता का प्रत्येक घर में सम्मान होना आरम्भ हो जायगा जिससे उम्मीद है कि इन पांचों माताओं का सम्मान होने लगेगा। जिससे देश उन्नति करता हुआ साथ ही समृद्धशाली होता हुआ पुनः "विश्व गुरु" तथा सोने की चिड़िया" हो जाने की आशा है। इसी भावना के साथ इस लेख को यहीं विराम देते हैं। ❁

पृष्ठ संख्या 12 का शेष-

जिसके पाने को स्वयं मैं खो गया,
जिसके कारण क्या से क्या मैं हो गया।
जिसकी कोमल कल्पना की छाँह में-
हार कर उन्माद मेरा सो गया।
उस अधूरे स्वप्न के विश्वास पर,
मैंने तरसाई जवानी की हवा।
आज फिर आई जवानी की हवा।
कुछ न कर पाई जवानी की हवा॥

❁❁❁

पृष्ठ सं. 13 का शेष-

जगत गुरू ऋषि दयानन्द की, शिक्षाओं को मानो तुम।
वीर साहसी बनो आर्यो!, सच्चाई को जानो तुम॥
कौन भला है, कौन बुरा है, ठीक तरह पहचानो तुम।
राम, कृष्ण अरु चंद्रगुप्त से, बनो वीर मर्दानो तुम॥
बातों से ना काम चलेगा, पकड़ो अब तलवार।
हे आर्य कुमारो! करो वेद प्रचार॥ 5॥

अगर न दोगे ध्यान आर्यो! सर्वनाश हो जाएगा।
वेद-मार्गी, देव पुरुष फिर, नजर न जग में आएगा॥
दुनिया भर में त्राहिमाम का, शब्द सुनाई आएगा।
'नन्दलाल' निर्भय तुम बिन ना, कोई जगत बचाएगा॥
लेखराम, श्रद्धानन्द बनकर, करो विश्व उद्धार।
हे आर्य कुमारो! करो वेद प्रचार॥ 6॥

❁❁❁

पशुओं के रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा

पशुओं को भी रोग उतना ही कष्ट देते हैं, जितना कि मनुष्यों को। अन्तर इतना ही है कि हम मनुष्य विवेक-साधन तथा उपायों द्वारा किसी सीमा तक रोग दूर करके कष्ट का निवारण कर लेते हैं; किन्तु बेचारे मूक, असहाय, विवश तथा केवल पूँछ हिलाने तक का उपाय कर सकने वाले पशु रोगग्रसित होकर कष्टों को सहते रहते हैं। पर मनुष्य जाति की शोभा इसमें नहीं है। जिसने अपनी बुद्धि तथा सामर्थ्य का उपयोग अपने ही लिये किया, उसने क्या किया? मनुष्य का यह कर्तव्य है कि परिवार के प्राणी के समान एक ही घर में रहनेवाले अपने पशुओं के भी दुःख को दूर करने के लिये कुछ उठा न रक्खें सोचा जाय तो ऐसा करने में वह पशुओं के ऊपर कोई एहसान नहीं करेगा, यह उसका धर्म है; क्योंकि मनुष्य ने ही तो उन्हें प्रकृति की गोदी से छीनकर अपने काम के लिये अपने घर में बांध रक्खा है। जंगली पशुओं की दवा करने कौन जाता है? प्रकृति माता स्वयं उनकी देखभाल करती है। अतः यदि मनुष्य प्रकृति माता से मांगकर लाये हुए पशुओं के दुःख सुख की परवा नहीं करता तो यह उसकी कृतघ्नता है और वह प्रकृतिदेवी का कोप-भाजन बनकर दण्ड का भागी होगा।

हमारे शास्त्रों में कहा है जब तक रोगी, भयभीत, चकित, बाघ अथवा चोर आदि से सतायी हुई, ऊँचे स्थान से गिरी हुई, दलदल में फंसी हुई, सर्दी-गर्मी से पीड़ित तथा अन्य किसी प्रकार से दुःखित गौ का उद्धार न कर ले, तब तक आर्यसन्तान कोई दूसरा कार्य न करे। यथा-

आतुरां मार्गशस्तां वा चौरव्याघ्रादिभिर्भयैः।
पतितां पंकलग्नां वा सर्वोपायैर्विमोचयेत्।।
ऊष्मे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम्।
न कुर्वीतात्मनस्त्राणं गोरकृत्वा तु शक्तितः।।

तात्पर्य यह कि जिस प्रकार अपने किसी घरवाले को खांसी-बुखार हो जाने पर हम वैद्य के पास दौड़ने लगते हैं, उसी प्रकार अपने पालित पशुओं के रोगों को दूर करने के लिये भी हमें सचेष्ट होना चाहिये।

पशुओं की रोगावस्था में पशुशाला का प्रबन्ध

किसी पशु के रोग-ग्रस्त हो जाने पर उसे पशुशाला से हटाकर किसी अलग स्थान में रखना चाहिये। इस प्रकार दूसरे नीरोग पशुओं की रक्षा होगी। यदि छूत की बीमारी न हो, तो भी रोगी पशु को अलग हटा देना ही ठीक है; क्योंकि प्रेम, द्वेष तथा सहानुभूति का भाव पशुओं में भी होता है। जब अन्य पशु अपने किसी साथी को दुखी या उदास देखेंगे तो वे भी उदास होकर खाना-पीना छोड़ सकते हैं। रोगी पशु का दाना-पानी दूसरे पशुओं के दाना-पानी में न मिलने पाये।

रोगी पशु की देखभाल

रोगी पशु की देखभाल बड़ी सावधानी से करनी चाहिये। उसको ऐसे स्थान पर रखना चाहिये, जहाँ हवा और प्रकाश अच्छी तरह आये-जाये; किन्तु पशु के ऊपर न हवा का झोंका सीधा लगे, न तो धूप लगे। मक्खी-मच्छरों से बचाने के लिये गूगल, गन्धक की धूप या साधारण धुआं कर देना चाहिये। पशु को दवा आदि पिलाते समय उसके साथ बहुत जबर्दस्ती करके उसे अधिक कष्ट न दिया जाय। यदि पशु एक दिन से अधिक एक करवट पड़ा रहे तो उसे करवट बदलाने की चेष्टा करनी चाहिये। रोग की पहचान वा निदान जल्दबाजी में नहीं, वरन ठीक से किसी चतुर व्यक्ति या चिकित्सक से कराना चाहिये। अच्छे हो जाने पर उसे अन्य पशुओं के साथ मिलाने में बहुत जल्दी करना ठीक नहीं। कोई तेज या जहरीली दवा लगानी हो तो ध्यान रखना चाहिये कि इधर-उधर न लग जाय। मालिक को नौकरों पर ही भरोसा न करके दिन में दो-एक बार स्वयं देखना चाहिये।

रोग होने के सामान्य कारण

1. चारा-दाना आवश्यकता से कम मिलना, 2. खुराक में आवश्यक पौष्टिक तत्वों का मेल न होना, 3. सड़ा-गला दाना-चारा खाना तथा गंदा पानी पीना, 4. गंदे स्थान, अधिक सर्दी-गर्मी और वर्षा से बचने का प्रबन्ध न होना तथा 5. छूत की बीमारियों से स्वस्थ पशुओं को बचाने के विषय में गोपालक की अनभिज्ञता।

रोगी पशु के लक्षण

1. दूध कम देना या न देना, 2. उदास रहना, 3 झुंड से अलग रहने की इच्छा, 4. चारे-दाने का त्याग, 5. जुगाली न करना, 6. गोबर न करना या पतला करना, 7. बार-बार उठना-बैठना, 8. आँखों का लाल हो जाना, 9. जल्दी-जल्दी सांस लेना, 10. मुख सूखना और 11. मुख और नाक से पानी गिरना।

स्वस्थ गाय, बैल और भैंस का तापमान प्रायः 101^0 से 104^0 तक होता है, नाड़ी की गति प्रति मिनट 45 से 50 बार तक है और सांस प्रतिमिनट में 10-12 बार आती है। इसके विपरीत हो तो पशु को रोगी समझना चाहिये।

दवा की मात्रा

रोगी पशुओं के लिये आगे जो दवाओं की मात्रा लिखी है, वह पूरे प्रौढ़ पशु के लिये है, जिसका वजन 10 मन के लगभग हो। अवस्था तथा वजन के अनुसार इस मात्रा में अन्तर पड़ेगा।

जन्म से 1 मास तक	1/16	मात्रा
2 मास से 4 मास तक	1/8	मात्रा
4 मास से 6 तक	1/4	मात्रा

6 मास से 12 मास तक	1/3 या 1/2	मात्रा
1 साल से 2 साल तक	1/2 और 3/4	मात्रा
2 साल से ऊपर	पूरी	मात्रा

इस रोग की कई-कई दवाइयाँ आगे दी गयी हैं, उनमें से कोई एक करनी चाहिये। एक लाभ करे तो दूसरी का प्रयोग करना चाहिये।

छोटे बच्चों के रोग और उनकी चिकित्सा

मनुष्य के बच्चों की भांति गाय-भैंस के बच्चे भी मिट्टी चाटने में बड़े हातिम होते हैं। कभी-कभी वे इतनी मिट्टी चाट जाते हैं कि वह उनके पेट में सड़ जाती है और कीड़े पड़ जाते हैं। कीड़े पड़ते ही बच्चा निर्बल होकर प्रायः मर जाता है। पहली रोक तो यह है कि बच्चों के मुंह में मुसका (जाली) चढ़ा दें, जिससे वे मिट्टी न चाट सकें, और यदि कीड़े पड़ गये हों तो आधी छटांक कबीला पीसकर आध पाव दही में मिलाकर देने से लाभ होता है।

कभी-कभी बच्चों के पेट में दूध जम जाता है, जिससे पाचनशक्ति मारी जाती है। इस रोग में मट्ठा एक पाव, सरसों का तेल आध पाव, तथा नमक आधी छटांक मिलाकर बच्चे को पिलाना चाहिये। इसमें एक छटांक अमकली को पानी में भिगोकर और आध पाव सरसों के तेल में मिलाकर देना भी लाभकारी है।

यदि सड़ा गला दाना-चारा खा लेने से अथवा गर्म और गंदा पानी पी लेने से बच्चे को पेचिश हो गयी हो और गोबर के साथ खून आता हो, तो आध पाव लिसोढ़ा के पत्तों को पानी में पीस-छानकर पिलाना चाहिये अथवा आधी छटांक ईसबगोल एक छटांक आंवले के पानी में देने से बहुत लाभ होता है।

जब बच्चे को खांसी हो जाय तो केले के सूखे पत्तों की राख बना लें और एक पैसे से दो पैसे भरतक इस राख को आधी छटांक घी में मिलाकर एक पाव कच्चे दूध के साथ बच्चे को पिलाना चाहिये।

मूत्र के साथ खून आने पर कल्मी शोरा चौथाई छटांक से आधी छटांक तक एक पाव कच्चे दूध और इतने ही पानी के साथ पिला देना चाहिये।

पेट में दर्द हो तो चौथाई से आधी छटांक तक पीने की तमाखू पानी में घोल-छानकर पिलाना ठीक है।

खुजली की भयंकर बीमारी भी बच्चों को प्रायः हो जाती है। इसके लिये निम्नलिखित पांच प्रकार की दवाइयाँ हैं-

1. एक छटांक लहसुन को आध पाव चने या जौ के आटे में मिलाकर पांच दिन तक खिलायें।
2. सूखे नीम के पत्तों का चूरा नमक में डालकर चने या जौ के आटे के साथ मिलाकर देना चाहिये।

-(शेष पृष्ठ सं. 34 पर)

कोई हमसे सीख लो

(1)

धर्म चर्चा मिटाना, कोई हमसे सीख लो।
आर्य से हिन्दू कहाना, कोई हमसे सीख लो॥

(2)

झोंपड़ी का नाम लेकर, महल दृढ़तर चाहिये।
ढोंग से खाना कमाना, कोई हमसे सीख लो॥

(3)

लोक में सत्कीर्त्ति जिनकी, आज तक फैली हुई।
हा! उन्हीं का कुल लजाना, कोई हमसे सीख लो॥

(4)

सिद्ध सद्धर्मी न कोई-भी बनें बानक बना।
भीतरी भर्ती भराना, कोई हमसे सीख लो॥

(5)

हो चुकी कब की समुन्नति, छोड़िये इस ख्याल को।
दुर्दशा के नद बहाना, कोई हमसे सीख लो॥

(6)

बैठकर सत्संग में भी, दुष्टता मन में रही।
रंग बेहूदा जमाना, कोई हमसे सीख लो॥

(7)

एकता के पाठ पढ़ने-का नहीं अनुराग है।
भीतरी चोटें चलाना, कोई हमसे सीख लो॥

(8)

खो चुके प्राचीन गौरव, दीन कबके हो चुके।
गैर लोगों को हँसाना, कोई हमसे सीख लो॥

(9)

वेद सम्मत धर्म देखो, दूर है व्यवहार से।
नींच करनी कर निचाना, कोई हमसे सीख लो॥

(10)

मांगलिक सद् भावनाओं–का निरन्तर ह्रास है।
कोरी बातों से रिझाना, कोई हमसे सीख लो॥

(11)

योग सत्युग का नहीं है, ऐतिहासिक बल घटा।
नार की जीवन जुड़ाना, कोई हमसे सीख लो॥

(12)

वर्ण आश्रम मिट चुके हैं, जी रही जातीयता।
पोच मत पाकर खिजाना, कोई हमसे सीख लो॥

(13)

हो न सकती है भलाई, दीन और ईमान से।
ठोकरें दिन–रात खाना, कोई हमसे सीख लो॥

(14)

काम करना प्रेम से कब, ठीक समझा जा रहा।
हो पृथक् खिचड़ी पकाना, कोई हमसे सीख लो॥

(15)

दूर है दिन अभ्युदय का, यह हमहीं दिखला रहे।
नींद में सोना सुलाना, कोई हमसे सीख लो॥

(16)

लाभ कर आदर्श जीवन, यश किसी का भी न हो।
नीच अपने को बनाना, कोई हमसे सीख लो॥

(17)

नेक भी रहने न पाये, इस जगह अत्युच्चता।
रीति पहले की झुंठाना, कोई हमसे सीख लो॥

(18)

जान कर भी धार्मिकों की, सीख लेते हैं नहीं।
धूल में सद्गुण मिलाना, कोई हमसे सीख लो॥

(19)

कर्म करके भी भला अब, कौन ऊँचा चढ़ सके।
जाति को जीवन दिलाना, कोई हमसे सीख लो॥

(20)

नींच समझे जायं ऊँचे-भी महा अन्धेर है।
ऐंठ में इठना इठाना, कोई हमसे सीख लो॥

(21)

नाम को द्विजता रही है, वेद विद्या त्याग दी।
धार्मिक आदर घटाना, कोई हमसे सीख लो॥

(22)

काम कुछ होता नहीं है, पूज्य सबके हैं बने।
टाँय फिस कर फिसफिसाना, कोई हमसे सीख लो॥

(23)

पार हे विवृद्धि पापी, धार खोटी धारणा।
धार्मिकों का दिल दुखाना, कोई हमसे सीख लो॥

(24)

शुद्ध भावों से न होगा, देश का कुछ भी भला।
नीयतों में गन्द लाना, कोई हमसे सीख लो॥

(25)

न्यूनता हो जाय सच्चे, प्रेम धन की भी न क्यों।
द्वेष की आदत बढ़ाना, कोई हमसे सीख लो॥

(26)

हो न सकता न्याय पंचों, में अदालत कीजिये।
नाश की अगनी जलाना, कोई हमसे सीख लो॥

(27)

सामुदायिक शक्तिसारी, मिट गई वाकी न है।
फूट का अंकुर उगाना, कोई हमसे सीख लो॥

(28)

दूर हो संकल्प सारा, सद्विचारों से भरा।
ध्यान ध्रुवता से हटाना, कोई हमसे सीख लो॥

(29)

सिद्ध साधकता न होगी, शुद्ध वार्त्तालाप से,
व्यंग वाणी में धसाना, कोई हमसे सीख लो॥

(30)

शास्त्र चर्चा का निशां ही, आज वाकी है यहां।
नाविलों पढ़ना पढ़ाना, कोई हमसे सीख लो॥

(31)

हो भला कैसे किसी का, शुद्ध आत्मा ज्ञान से।
बात इतकी उत भिड़ाना, कोई हमसे सीख लो॥

(32)

हा! न क्यों बरवाद होंगे, मेलकर प्रतिद्वन्दता।
धूल गौरव की उड़ाना, कोई हमसे सीख लो॥

(33)

हिन्दुओं में हास्य होगा, आर्य बन कर भी डरो।
आत्म निर्बलता दिखाना, कोई हमसे सीख लो॥

(34)

धर्मवीरों को सुझा दो, दान में कौड़ी न दें।
भारतोदय यों कराना, कोई हमसे सीख लो॥

(35)

दीजिये चन्दा न बाकी, धन सभा का मार लो।
चाल ऐसी उर बसाना, कोई हमसे सीख लो॥

(36)

जोकि हैं विज्ञान भिक्षा, मांगते यतिवर्ग से।
दोष दल उनके गिनाना, कोई हमसे सीख लो॥

(37)

हो चुकी संसार में ध्रुव, धर्म की सद् घोषणा।
वार्षिक–उत्सव मनाना, कोई हमसे सीख लो॥

(38)

ध्यान अपनी नींचता पर, लेश भर भी तो नहीं।
डांट औरों को बताना, कोई हमसे सीख लो॥

(39)

लीडरों को कोसते पर, लीडरी मिलती नहीं।
ढीट? लज्जा को भगाना, कोई हमसे सीख लो॥

–(शेष अगले अंक में)

अखिल–भारतीय–वेदाङ्ग – शोधसङ्गोष्ठी

दिनाङ्कः 9–10 नवम्बरमासः 2019

स्थानम्: श्रीमद्दयानन्दार्षज्योतिर्मठगुरुकुलम्, पौन्धा, देहरादूनम् (उत्तराखण्डम्)

महोदयाः!

वेदार्थावगमनाय महर्षिमुनिप्रवरैरनवरतसाधनातपोबलद्वारा प्राणिमात्रहितार्थकामनया षड्वेदाङ्गागि प्रणीतानि। यतोऽनृषिजना अपि वैदिकज्ञानार्णवे निमग्नाः सन्तः सत्यज्ञानं प्राप्नुयुरिति। तेषु षट्सु वेदाङ्गेषु शिक्षावेदाङ्ग प्राथम्यं भजते। उक्तमपि शिक्षाग्रन्थेषु यत्–**'शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य'** यथाऽपिहितया नासिकया कश्चिज्जनः प्राणान् अनुपलभ्य मृत्युं गच्छेत्तथैव शिक्षाघ्राणेऽपिहितेऽपि वेदपुरुषो न जीवेत्। वर्तमाने शिक्षावेदाङ्गं सर्वत्र नोचितमाद्रियते। येन वेदाङ्गस्यास्य महत्त्वं सर्वत्र न सामान्या असामान्या वा जना जानन्तीति सर्वथानुभूयते भूयिष्ठैः प्राज्ञैः।

वर्णोच्चारणशिक्षाया महत्त्वं केन्द्रीभूतं विधायैव श्रीमद्दयानन्दवैदिकगुरुकुलपरिषदः तत्त्वावधाने वेदाङ्गसङ्गष्ठीयं समायोज्यते। अस्या विषया अधोलिखिताः सन्ति। सर्वेषामपि विदुषां सादरं शोधलेखान् विषयेष्वेषु वयमभिलषामः।

मुख्यविषयः – पाणिनीय–वर्णोच्चारणशिक्षा

उपविषयाः –

1. पाणिनिकृतवर्णोच्चारणशिक्षाया वैज्ञानिकता।
2. वर्णोच्चारणशिक्षादृष्ट्या वर्णोत्पत्तिविज्ञानम्।
3. वर्णोच्चारणशिक्षानुसारं ध्वनिविज्ञानम्।
4. वर्णोच्चारणे स्थानप्रयत्नमहत्त्वम्।
5. वर्णोच्चारणशिक्षायां यमस्वरूपम्।
6. वर्त्तमाने वर्णोच्चारणशिक्षायाः प्रासङ्गिकता।
7. वेदज्ञानाय वर्णोच्चारणशिक्षाया अवदानम्।
8. वर्णोच्चारणशिक्षोद्धाराय स्वामिदयानन्दस्य योगदानम्।

ध्यातव्यं यद् वेदाङ्गसङ्गोष्ठ्यामस्यां गुरुकुलेषु अधीयानाः शास्त्री/आचार्य श्रेण्याः छात्राः, गुरुकुलेषु समधीताः स्नातकाः स्नातिकाश्च, शिक्षकाः शिक्षिकाः प्राध्यापका आचार्याश्च भागं ग्रहीतुं शक्नुवन्ति। शोधलेखाः संस्कृतहिन्दीभाषामाध्यमेन भवितुमर्महन्ति। सादरं सर्वेऽपि निवेद्यन्ते यद् उपर्युक्तविषयोपविषयेषु स्वशोधलेखः। सर्वेषामपि भोजनावासव्यवस्था कार्यक्रमायोजकपक्षतो भविष्यति।

संयोजकः

अखिल–भारतीय–वेदाङ्ग–शोधसङ्गोष्ठीसमितिः

सम्पर्कसूत्राणि – 9411106104, 9868855155, 9079600568, 9997304886, 8810005096, 9411310530

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्

कार्यालय : 119 गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली-110049 द्वारा आयोजित

द्वितीय वैदिक-गुरुकुलीय-शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा-2019

दिनांक : 8, 9 एवं 10 नवम्बर 2019

स्थान : श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा, देहरादून (उत्तराखण्ड)

क्र.	प्रतिस्पर्धा	प्रतिभागी एवं प्रतिस्पर्धा	पुरस्कार
1	**वैदिक सिद्धान्त प्रश्नमंच**	कक्षा - 1 से 8 पर्यन्त के छात्र **सन्दर्भ ग्रन्थ-** **बालशिक्षा**, प्रकाशक-आर्ष साहित्य संस्थानम्, 119 गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली-49 **व्यवहारभानु**, प्रकाशक-विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-6 **पंचमहायज्ञविधि**, प्रकाशक-विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क दिल्ली-6 **वैदिक धर्मप्रश्नोत्तरी**, प्रकाशक-विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-6 **कालजयी सन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती**, प्रकाशक-सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी.) आर्यसमाज थर्मल कालोनी, पानीपत (हरि0)	प्रथम-3000/- द्वितीय-2000/- तृतीय-1000/- 2 सान्त्वना पुरस्कार-500/-
2	**अष्टाध्यायी कण्ठपाठ एवं लेखन**	पूर्वमध्यमा-उत्तरमध्यमा श्रेणी	अग्रिम10 उत्तीर्ण छात्रों को 5000/- (प्रति छात्र)

3	**धातुपाठ कण्ठपाठ एवं लेखन**	पूर्वमध्यमा–उत्तरमध्यमा श्रेणी	अग्रिम 10 उत्तीर्ण छात्रों को 4000/– (प्रति छात्र)
4	**श्रीमद्भगवतगीता कण्ठपाठ एवं लेखन**	प्रथमातः उत्तरमध्यमा श्रेणी	प्रथम–5000/– द्वितीय–3000/– तृतीय–2000/–
5	**त्रिभाषी कोषः कण्ठपाठ**	प्रथमातः शास्त्री श्रेणी	प्रथम–3000/– द्वितीय–2000/– तृतीय–1000/–
6	**वेदभाष्यभाषण**	शास्त्री–आचार्य श्रेणी **(निरुक्त (द्वितीय अध्याय)**	प्रथम–2500/– द्वितीय–1500/– तृतीय–1000/–
7	**शलाका–परीक्षा**	शास्त्री–आचार्य श्रेणी **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का ईश्वरविषय एवं वेदोत्पत्ति विषय (संस्कृतभाग)**	प्रथम–5000/– द्वितीय–3000/– तृतीय–2000/–
8	**शास्त्रार्थ–विचार** (वाद–विवाद)	**शास्त्री–आचार्य श्रेणी** **विषय–ईश्वर साकार या निराकार।** **समय–7 मिनट**	प्रथम–5000/– द्वितीय–3000/– तृतीय–2000/–
9	**वेद–मन्त्रान्त्याक्षी** (संहिताभाग)	प्रथमातः शास्त्री श्रेणी	प्रथम–5000/– द्वितीय–3000/– तृतीय–2000/–
10	**अक्षरश्लोकी**	प्रथमातः शास्त्री श्रेणी (अनुष्टुप् छन्द एवं अश्लीलार्थ श्लोक वर्जित)	प्रथम–5000/– द्वितीय–3000/– तृतीय–2000/–
11	**समस्यापूर्ति (सद्य–पद्य–रचना)**	उत्तरमध्यमा–शास्त्री–आचार्य श्रेणी	प्रथम–2500/– द्वितीय–1500/– तृतीय–1000/–

ग्रन्थ परम्परा से अध्ययन करने वाले छात्रों की श्रेणी का निर्धारण- प्रवेशिका श्रेणी (6-8), प्रथमावृत्तिश्रेणी (9-12), काशिका-महाभाष्य श्रेणी (शास्त्री-आचार्य) के रूप में किया जायेगा।
प्रतिस्पर्धाओं की नियमावली संलग्न है। कृपया नियमावली को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

द्वितीया-वैदिक-गुरुकुलीय-शास्त्रीय-प्रतिस्पर्धा-2019

नियमावली

प्रतिस्पर्धा	नियमावली
1. वैदिक सिद्धान्त प्रश्नमंच	● **वैदिक-सिद्धान्त प्रश्नमंच एवं त्रिभाषी कोषः कण्ठपाठ** प्रतिस्पर्धा में एक गुरुकुल से दो छात्र/छात्रायें प्रतिस्पर्धी हो सकेंगे। ● वैदिक सिद्धान्त प्रश्न मंच के लिए बालशिक्षा, व्यवहारभानु,पंचमहायज्ञ विधि, वैदिक धर्मप्रश्नोत्तरी, जीवन चरित्र-कालजयी सन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती (लेखक-दीपचन्द्र निर्मोही) पुस्तकें निर्धारित होंगी।
2. त्रिभाषी कोषः कण्ठपाठ	● त्रिभाषी-कोषः कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा के लिए श्री ओंकार जी द्वारा लिखित, रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली सोनीपत से प्राप्त 'त्रिभाषी-कोषः' पुस्तक के पवर्ग से लेकर हकार पर्यन्त (पृ. सं.-72 से 136 पर्यन्त) का निर्धारण किया गया है। ● वैदिक-सिद्धान्त प्रश्नमंच वं त्रिभषी कोषः कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा वर्तुलाकार बैठक में आयोजित की जायेगी। प्रतिस्पर्धियों के शुभनामों के अकारादि क्रम से प्रतिस्पर्धियों को स्थान दिया जायेगा। ● वैदिक-सिद्धान्त प्रश्नमंच एवं त्रिभाषी कोषः कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा का शुभारम्भ चिट निकालकर किया जायेगा। ● प्रश्न पूछने के पश्चात् प्रतिस्पर्धी द्वारा उत्तर न देने की दशा में प्रश्न अग्रिम प्रतिस्पर्धी के लिए अग्रसरित किया जायेगा। (प्रश्न अग्रसरित करने की अवधि 30 सैकेण्ड की होगी) ● प्रतिभागी को केवल एक बार निरुत्तर होने पर पुनः अवसर दिया जायेगा किन्तु दूसरी बार निरुत्तर होने पर प्रतिस्पर्धा से बाहर हो जायेगा। अन्तिम आठ प्रतिभागी शेष रहने पर यह सुविधा भी स्वतः समाप्त हो जायेगी। चाहें प्रतिस्पर्धी इससे पूर्व निरुत्तर न रहा हो।

1. अष्टाध्यायी कण्ठपाठ एवं लेखन	● **अष्टाध्यायी, धातुपाठ, श्रीमद्भगवद्गीता (कण्ठपाठ व लेखन) प्रतिस्पर्धा** में एक गुरुकुल से एक छात्र/छात्रा प्रतिस्पर्धी हो सकेंगे। ● यह प्रतिस्पर्धा परीक्षा प्रतिस्पर्धा है। जिसमें कण्ठस्थीकरण – 30 अंक शुद्धोच्चारण –20 अंक, प्रवाह – 20 अंक, शुद्धलेखन – 30 सहित कुल 100 अंकों की प्रतिस्पर्धा होगी।
2. धातुपाठ कण्ठपाठ एवं लेखन **3. श्रीमद्भगवतगीता कण्ठपाठ एवं लेखन**	● 75 अंकों से अधिक अंकप्राप्त प्रतिस्पर्धी को ही उत्तीर्ण स्वीकार किया जायेगा। **अष्टाध्यायी एवं धातुपाठ प्रतिस्पर्धा** के उत्तीर्ण प्रतिस्पर्धियों को अंकों की वरीयताक्रम से अग्रिम दस प्रतिभागियों को समान पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। ● **श्रीमद्भगवद्गीता प्रतिस्पर्धा** के अग्रिम तीन प्रतिस्पर्धियों को वरीयता–क्रम से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान दिया जायेगा।
वेदभाष्यभाषण निरुक्त (द्वितीय अध्याय)	● **वेदभाष्यभाषण (निरुक्त–द्वितीय अध्याय) प्रतिस्पर्धा** में एक गुरुकुल से एक ही प्रतिस्पर्धी होगा। प्रतिस्पर्धा से एक दिन पूर्व निर्धारित विषय से सम्बन्धित भाषण का विषय सुनिश्चित कर दिया जायेगा। भाषणकाल की अवधि 5 से 6 मिनट होगी। भाषण के पश्चात् सम्बन्धित विषय से निर्णायक तीन प्रश्न पूछे जायेंगे। प्रतिस्पर्धियों के शुभनामों के अकारादि क्रम से प्रतिस्पर्धियों को स्थान दिया जायेगा तथा प्रतिस्पर्धा का शुभारम्भ चिट निकाल कर किया जायेगा।
शलाका–परीक्षा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का ईश्वरविषय एवं वेदोत्पत्ति विषय (संस्कृतभाग)	● **शलाका परीक्षा** में एक गुरुकुल से एक ही प्रतिस्पर्धी होगा। **ऋग्वेदादि–भाष्यभूमिका के ईश्वरविषयक तथा वेदोत्पत्तिविषयक संस्कृत भाग ही ग्राह्य है।** यह प्रतिस्पर्धा तीन चरणों में सम्पन्न होगी–1. स्मृतिबल परीक्षण (मूलपाठ का यथावत् श्रावण), 2. ग्रन्थपंक्ति व्याख्यान– सामर्थ्य परीक्षण (परीक्षक द्वारा निर्धारित पाठ से किसी भी पंक्ति की अर्थ विवेचना पूछी जायेगी, जिनका उत्तर संस्कृत अथवा हिन्दी में दे सकेंगे), 3. शंका–समाधान परीक्षण (परीक्षक द्वारा निर्धारित पाठ से तीन प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनके उत्तर संस्कृत अथवा हिन्दी में दे सकेंगे)। प्रतिस्पर्धियों के शुभनामों के अकारादि क्रम से प्रतिस्पर्धियों को स्थान दिया जायेगा तथा प्रतिस्पर्धा का शुभारम्भ चिट निकाल कर किया जायेगा।

शास्त्रार्थ विचार (वाद–विवाद)	●	**शास्त्रार्थ विचार (वाद–विवाद) प्रतिस्पर्धा** में एक गुरुकुल से पक्ष–विपक्ष अर्थात् एक जोड़ी ही प्रतिस्पर्धी होगी।
	●	विषय प्रस्तुति के लिए 5–7 मिनट निर्धारित किये गये हैं। 5 मिनट की समाप्ति पर प्रथम अर्धसंकेत किया जायेगा तथा 7 मिनट की समाप्ति पर पूर्णसंकेत किया जायेगा। विषय–प्रस्तुति में न्यून या अधिक समय होने पर अंक काटे जायेंगे।
	●	पक्ष एवं विपक्ष के जोड़े का निर्धारण चिट निकालकर किया जायेगा।
	●	प्रथम पक्ष द्वारा विषय–प्रस्तुति के पश्चात् प्रतिपक्षी को प्रस्तुत विषय से ही पाँच प्रश्न पूछने होंगे, जिनका उत्तर प्रथम पक्ष को देना होगा। ऐसे ही द्वितीय पक्ष द्वारा विषय–प्रस्तुति के पश्चात् प्रथम पक्ष को प्रस्तुत विषय से पाँच प्रश्न पूछने होंगे, जिनका उत्तर द्वितीय पक्ष को देना होगा। प्रति प्रश्न एवं उत्तर के लिए प्रतिस्पर्धियों को अधिकतम 60 सेकेण्ड का समय दिया जायेगा।
	●	शास्त्रार्थ विचार (वाद–विवाद) प्रतिस्पर्धा में विषयप्रस्तुति–20, शुद्धोच्चारण–10, भावभंगिमा एवं प्रवाह–10, प्रश्न–5x2, उत्तर–5x2 अंक सहित कुल 60 अंक होंगे।
	●	शास्त्रार्थ विचार (वाद–विवाद) प्रतिस्पर्धा के पुरस्कार गुरुकुल की जोड़ी के अनुसार दिये जायेंगे।
1. **वेद–मन्त्रान्त्याक्षरी** (संहिताभाग)	●	**वेदमन्त्रान्याक्षरी एवं अक्षरश्लोकी प्रतिस्पर्धा** में एक गुरुकुल से दो प्रतिभागी होंगे। यह प्रतिस्पर्धा वर्तुलाकार बैठक में आयोजित की जायेगी। प्रतिस्पर्धियों के शुभनामों के अकारादि क्रम से प्रतिस्पर्धियों को स्थान दिया जायेगा तथा प्रतिस्पर्धा का शुभारम्भ चिट निकाल कर किया जायेगा।
	●	पूर्व प्रतिस्पर्धी के द्वारा निरुत्तर होने पर अग्रिम प्रतिस्पर्धी के लिए क्रम अग्रसरित किया जायेगा।
2. **अक्षरश्लोकी** (अनुष्टुप् छन्द एवं अश्लीलार्थ श्लोक वर्जित)	●	**वेदमन्त्रान्याक्षरी एवं अक्षरश्लोकी प्रतिस्पर्धा** में प्रतिभागी को केवल एक बार निरुत्तर होने पर पुनः अवसर दिया जायेगा किन्तु दूसरी बार निरुत्तर होने पर प्रतिस्पर्धा से बाहर हो जायेगा। अन्तिम आठ प्रतिभागी शेष रहने पर यह सुविधा भी स्वतः समाप्त हो जायेगी। चाहें प्रतिस्पर्धी इससे पूर्व निरुत्तर न रहा हो। (प्रश्न अग्रसरित करने की अवधि 30

सैकेण्ड की होगी)

- **वेदमन्त्रान्त्याक्षरी प्रतिस्पर्धा** में पूर्व प्रतिस्पर्धी द्वारा पठित मन्त्र के अन्तिम वर्ण से पूर्व हल वर्ण से अग्रिम प्रतिस्पर्धी को मन्त्रोच्चारण करना होगा। निर्णय की साम्य-व्यवस्था में किंचित परिवर्तन निर्णायकों के विवेकाधीन होगा।
- **अक्षरश्लोकी प्रतिस्पर्धा** में पूर्व प्रतिस्पर्धी द्वारा पठित श्लोक की तृतीय पंक्ति के प्रथम वर्ण से अग्रिम प्रतिस्पर्धी को श्लोकोच्चारण करना होगा। यथा-

विलीनं पाखण्डैः प्रशमितमघैः शान्तमशुभैः,
प्रभूतं सत्कार्यैरुदितमनघार्यैर्यदुदयात्।
कवीन्द्रैर्वर्णीन्द्र! प्रतिदिनमयं यन्नुपचयम्,
कथं वर्ण्यो वर्णस्तव तुलितवर्णैरतुलितः॥

इस श्लोक की तृतीय पंक्ति में प्रथम वर्ण 'क' है, अतः अग्रिम प्रतिभागी को 'क' वर्ण से श्लोक उच्चारित किया जायेगा-

कियत्यो नो जाता जगती शिवरात्र्यो ननु पुरा,
कियद्भिर्नाकारि प्रथितशिवरात्रीव्रतविधिः।
परं सा काप्यासीद् व्रतिवर! जगन्मङ्गलकरी,
सवित्री ज्ञानानाममृतफलदात्री तव यते॥

- **अक्षरश्लोकी प्रतिस्पर्धा** में अनुष्टुप् छन्द एवं अश्लीलार्थ श्लोक पूर्णतः वर्जित होंगे।

समस्यापूर्ति
(सद्य-पद्य-रचना)

समस्यापूर्ति (सद्य-पद्य-रचना) प्रतिस्पर्धा में एक गुरुकुल से दो प्रतिभागी होंगे। समस्यापूर्ति (सद्य-पद्य-रचना) के लिए परीक्षाफल में ही तीन समस्यायें (तीन अलग-अलग श्लोकनिर्माणार्थ पंक्तियां) दी जायेंगी। समस्यापूर्ति (सद्य-पद्य-रचना) के लिए 1 घण्टे का समय निर्धारित है। दी गयी पंक्ति के अनुसार ही अधिकाधिक उपयुक्त शुद्ध श्लोकों की रचना करनी होगी, (राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित प्रतिस्पर्धा के नियमानुसार) जिसके आधार पर प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त होगा।

- प्रथम वैदिक गुरुकुलीय-शास्त्रीय-प्रतिस्पर्धा-2018 के वैदिक सिद्धान्त प्रश्नमंच, अष्टाध्यायी कण्ठपाठ एवं लेखन तथा धातुपाठ कण्ठपाठ एवं लेखन प्रतिस्पर्धा में पुरस्कार प्राप्त विजेता तद्विषयक प्रतिस्पर्धा में प्रतिभाग नहीं कर सकेंगे।

- निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य एवं स्वीकार्य होगा।
- ग्रन्थ परम्परा से अध्ययन करने वाले छात्रों की श्रेणी का निर्धारण– प्रवेशिका श्रेणी (6–8), प्रथमावृत्तिश्रेणी (9–12), काशिका–महाभाष्य श्रेणी (शास्त्री–आचार्य) के रूप में किया जायेगा।
- सभी प्रतिस्पर्धियों को द्वितीय शयनयान श्रेणी/ सामान्य बस का किराया दिया जायेगा। (तत्काल टिकट शुल्क–प्रभार देय नहीं होगा) प्रतिस्पर्धियों के साथ आने वाले मार्गदर्शकों अथवा सहयोगियों को यात्रा–व्यय स्वयं वहन करना होगा। यात्रा टिकट साथ अवश्य लायें। आपके आवास–निवास एवं भोजन का समुचित प्रबन्ध कार्यक्रमस्थल की ओर से रहेगा।

पृष्ठ सं. 22 का शेष–

3. मसूर की दाल तथा सुपारी, दोनों को जलाकर इनकी राख को नीम के तेल में डालकर शरीर में लेप करें।

4. पीली सरसों को कपड़े धोनेवाले साबुन में मिलाकर शरीर में लेप कर दें और 4–6 घंटे पीछे फिनाइल के पानी से नहला देना चाहिये।

5. एक पाव कडुवे तेल में एक छटांक गन्धक मिलाकर रख लें और शरीर पर लेप करता रहे।

यदि बच्चे के मसूढ़े फूल गये हों और उनमें घाव हो गये हों तो उन्हें मां से अलग करके नीचे लिखी दवा करनी चाहिये–

एक पाव घी और छटांक एप्सम साल्ट मिलाकर पिलाना चाहिये। घी न मिल सके तो कोई दूसरी जुलाब की दवा दे देनी चाहिये। बच्चे के मुंह को फिटकरी के पानी से भली–भांति दिन में चार बार धोना चाहिये।

–शेष अगले अंक में

तो फिर आप भगवान के दोस्त होंगे

एक बच्चा जला देने वाली गर्मी में नंगे पैर गुलदस्ते बेच रहा था। लोग उसमें भी मोलभाव कर रहे थे। एक सज्जन व्यक्ति को उसके पैर देखकर बहुत दया आई। सज्जन व्यक्ति ने बाजार से नये जूते खरीदकर उस बच्चे को देते हुए कहा– 'बेटा लो, ये जूते पहन लो।

उस बच्चे ने तुरन्त जूते पहन लिए, उसका चेहरा खुशी से दमक उठा और उस सज्जन की ओर पलटकर देखा। उसका हाथ थामकर पूछा–आप भगवान हैं? उस सज्जन व्यक्ति ने अपना हाथ छुड़ाकर कहा 'नहीं मैं भगवान नहीं हूँ।

बच्चा फिर मुस्कुराया और कहा, तो फिर आप जरूर भगवान के दोस्त होंगे? क्योंकि मैंने कल रात भगवान से कहा था कि भगवान मुझे नये जूते दे दो। ❁

काले पानी गए हमीं, फाँसी पर भी हम ही लटके
हमने ही प्रिय स्वतन्त्रता के हित विष के प्याले गटके
उनकी क्या हम कहें जिन्होंने बुजदिल बन दम तोड़ा था
छोड़ वतन का प्यार, अड़ाया आजादी में रोड़ा था
अंग्रेजों ने चाहे हमारा सारा तीत निचोड़ा था
पर, स्वराज्य के खातिर हमने लड़ना कभी न छोड़ा था
सत्तावन सन् बयालीस के जाहिर जौहर अनुपम हैं।
विद्या में बल-वैभव में हम नहीं किसी से भी कम हैं॥

हड़प लिये जाएँ हलवे-से हम, ऐसी है बात नहीं
आँख मिलाएँ हमसे नत्थू खैरों की औकात नहीं
हम में है सामर्थ्य किसी से खा सकते हैं मात नहीं
हाँ! हममें है एक कमी, हम गुण्डे या बदजात नहीं
गुण्डे उसके टुकड़े करते जिसके टुकड़े खाते हैं
गुण्डे वो, जो चला पीठ पर छुरियाँ खून बहाते हैं
आज हो रहीं फिर बातें घातें फितना-अंग्रेजी की
दी जाती हैं गीदड़-भभकी रोज हमें खूँरेजी की
की परवाह न हमने बिलकुल साम्राज्य अंग्रेजी की
उमड़े दुख के सागर तो हमको तरना भी आता है
मेल-मिलाप देश के भक्तों से करना भी आता है
नेह निबाहेगा जो कोई, हम भी नेह निबाहेंगे
जो न हमें चाहे, न बाप को भी हम उसके चाहेंगे
मुस्लिम, ईसाई, सिख जो भी काम देश के आएँगे
उनके गर्म पसीने की जा अपना लहू बहाएँगे
प्रिय स्वदेश की उन्नति में जो भी रोड़े अटकाएँगे
भारत के फिर टुकड़े करने के षड्यन्त्र रचाएँगे
ऐसे गद्दारों के हम सारे मन्सूबे तोड़ेंगे
छेड़ेगा जो हमको नाहक उसको कभी न छोड़ेंगे
हम हैं दिल के साफ, समझते कभी किसी को गैर नहीं
मिन्नत करने जायँ किसी के द्वार फालतू पैर नहीं
भोले-भाले समझ हमें वे व्यर्थ बढ़ाएँ बैर नहीं
अगर तुल पड़े हम अपनी पर, तो फिर समझो खैर नहीं
मिटा सके हमको 'प्रकाश कवि' ऐसे किसमें दम-खम हैं।
विद्या में, बल-वैभव में हम नहीं किसी से भी कम हैं॥

❁

सत्य प्रकाशन मथुरा के अनमोल प्रकाशन

शुद्ध रामायण (सजिल्द)	220.00	भ्रांति दर्शन	20.00	गायत्री गौरव	5.00
शुद्ध रामायण (अजिल्द)	170.00	शान्ता	20.00	महर्षि दयानन्द की मान्यतायें	5.00
शंकर सर्वस्व	120.00	संध्या रहस्य	20.00	सफल व्यक्तित्व	5.00
मानस पीयूष (रामचरित मानस)	100.00	गीता तत्व दर्शन	20.00	जीजा साले की बातें	5.00
शुद्ध कृष्णायण	80.00	गृहस्थ जीवन रहस्य	20.00	विषपान और अमृत दान	5.00
विदुर नीति	40.00	श्रीमद् भगवत गीता	20.00	पंचाग के गुलाम	5.00
वैदिक स्वर्ग की झांकियाँ	40.00	दयानन्द और विवेकानन्द	15.00	सर्वश्रेष्ठ कहानियां (प्रेस में)	
चाणक्य नीति	40.00	इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ	12.00	नमस्ते ही क्यों	10.00
महाभारत के प्रेरक प्रसंग	40.00	बाल मनुस्मृति	12.00	महिला गीतांजलि	15.00
नित्य कर्म विधि (प्रेस में)		ओंकार उपासना	12.00	पुराणों के कृष्ण	12.00
वेद प्रभा	30.00	आर्यों की दिनचर्या	12.00	भागवत के नमकीन चुटकुले	8.00
शान्ति कथा	30.00	शुद्ध सत्यनारायण कथा	15.00	आदर्श पत्नी	10.00
भारत और मूर्ति पूजा	30.00	दादी पोती की बातें	10.00	मानव तू मानव बन	8.00
यज्ञमय जीवन	30.00	दण्डी जी का जीवन पथ	10.00	ऋषि गाथा	4.00
दो बहिनों की बातें	30.00	क्या भूत होते हैं (प्रेस में)		सर्प विष उपचार	4.00
दो मित्रों की बातें (प्रेस में)		महाभारत के कृष्ण	15.00	चूहे की कहानी	4.00
संगीत रत्नाकर प्रथम भाग	25.00	ब्रजभूमि और कृष्ण	8.00	उपासना के लाभ	4.00
चार मित्रों की बातें	20.00	सच्चे गुच्छे	8.00	भगवान के एजेन्ट	3.00
भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक	20.00	मृतक भोज और श्राद्ध तर्पण	8.00	दयानन्द की दया	3.00
मील का पत्थर	20.00	वृक्षों में जीव है या नहीं	5.00	शांति पथ	2.00

आवश्यक सूचना

1. पाठकगण वर्ष 2019 के लिये वार्षिक शुल्क 150/– रूपये अविलम्ब भिजवायें तथा पन्द्रह वर्ष की सदस्यता हेतु 1500/– भिजवायें।
2. पत्रिका भेजने की तारीख प्रतिमाह 7 व 14 है, कृपया ध्यान रखें।

बुक–पोस्ट
छपी पुस्तक/पुस्तिका

सेवा में,

.....

.....

.....

.....

..... पिन कोड .....

पत्र व्यवहार का पता :–
व्यवस्थापक – कन्हैयालाल आर्य
सत्य प्रकाशन
डाकघर– गायत्री तपोभूमि, वृन्दावन मार्ग
(आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग), मसानी चौराहे के पास,
मथुरा (उ० प्र०) 281003
फोन (0565) 2406431
मोबा. 9759804182

Yogendra # 9927136600

मुद्रक : स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक आचार्य स्वदेश के लिए मित्तल कम्प्यूटर प्रिंटर्स, वृन्दावन रोड, मथुरा में छपकर सत्य प्रकाशन मथुरा से प्रकाशित